हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

दिसम्बर, 2011 वर्ष 10 अंक 10

सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 12/-
वार्षिक	₹ 120/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

ह़ज़रत हुसैन रज़िअल्लाहु अ़न्हु

है शहीदों में बड़ा दर्जा हुसैन का
मोमिनों के दिल पे है क़ब्ज़ा हुसैन का
हक़ जिसे समझा, रहे साबित उसी पर ता हयात
हक पे देना जान है शेवा हुसैन का
हक़्क़ वाले हक से हरगिज़ हैं नहीं मुँह मोड़ते
हर मुहिब्बे हक़्क़ है शैदा हुसैन का
नाना के महबूब और थे लाडले ऐसे हुसैन
शाने पे देखा गया जुस्सा हुसैन का
करबला ने ख़ाक व ख़ूँ में गरचे देखा है यहाँ
पर वहाँ देखेंगे सब रुत्बा हुसैन का
रहमतें या रब नबी पर और हों लाखों सलाम
उनके आल अस्हाब पर हों रहमतें या रब मुदाम

इदारा

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

Desining & Editing by : Qamaruzzama- +91 94522 95052, +91 727527805

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
आशूरा का दिन	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	5
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	8
इस्लाम में तब्लीग व तरबियत का मकाम	मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान नदवी	11
आदर्श शासक	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	20
आकस्मिक घटना	माखूज़	21
ज्ञान यदि धन के अधीन है तो अज्ञानता है	मौ0 सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी	22
मुस्लिम समाज	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	24
दुश्मन अगर कवी तो	मौ0 वाजेह रशीद नदवी	25
सच्चा शिक्षक समाज का अच्छा मार्गदर्शक	माखूज़	29
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी	31
भ्रष्टाचार को मिटाने में	ए0जे0 खान	34
नकहत की तब्लीग़	इदारा	36
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	39

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी

सूर–ए–बक़रह

अनुवाद : और जब लिया हमने वादा तुम्हारा कि न करोगे खून आपस में और न निकाल दोगे अपनों को अपने वतन से, फिर तुमने इक़रार कर लिया और तुम मानते हो[1(84)]। फिर तुम वह लोग हो कि वैसे ही खून करते हो आपस में और निकाल देते हो अपने एक फिरके (समुदाय) को उनके वतन से, चढ़ाई करते हो उन पर पाप और अत्याचार से[2], और यदि वही आएं तुम्हारे पास किसी के कैदी हो कर तो उनका बदला देकर छुड़ाते हो, हालांकि हराम है तुम पर उनका निकाल देना भी, तो क्या मानते हो कुछ किताब को और नहीं मनते कुछ को[3], तो कोई दण्ड नहीं उसका जो तुममें ये काम करता है मगर दुनिया की रुसवाई वाली ज़िन्दगी में, और प्रलय (*क़यामत*) के दिन पहुँचाए जाएं सख्स से सख्त अज़ाब में, और अल्लाह अनभिज्ञ नहीं है तुम्हारे कर्मों से[4(85)]। ये वही लोग हैं जिन्होंने मोल ली दुनिया की ज़िन्दगी आखिरत (परलोक) के बदले, तो न कम होगा उन पर अज़ाब (दण्ड) और न उनको मदद पहुँचेगी[5(86)]। और निःसन्देह हमने दी मूसा अ0 को किताब और एक के बाद एक संदेष्टा उसके पीछे भेजे, और दिये हमने ईसा पुत्र मरियम को सरीह मुअ्जिज़ा (खुला ईश्वरीय चमत्कार) और शक्ति दी उसको पवित्र आत्मा (रूहुल कुदुस) से[6], फिर भला किया जब तुम्हारे पास लाया कोई रसूल (सन्देष्टा) वह आदेश जो न भाया तुम्हारे मन को तो तुम दम भरने लगे, फिर एक समूह को झुटलाया[7], और एक समूह की तुमने हत्या की[8(87)]।

तफ़्सीर (व्याख्या)

1. अर्थात न अपने समुदाय की हत्या करो और न उनको निर्वासित करो।

2. मदीने में दो क़बीले यहूदियों के थे। एक बनू कुरैज़ा दूसरा बनू नज़ीर। ये दोनों आपस में लड़ा करते थे। और मदीने में बहुदेववादियों के भी दो क़बीले थे। एक औस और दूसरा खज़रज। ये दोनों भी आपस में दुश्मन थे। बनू कुरैज़ा तो औस क़बीले के दोस्त बने और बनू नज़ीर ने खज़रज से दोस्ती की। लड़ाई में हर कोई अपने दोस्त कबीले की हिमायत करता। जब कोई कबीला दूसरे पर वर्चस्व स्थापित कर लेता तो निर्बलों और दुर्बलों को निर्वासित करता, उनके घर ढाते लेकिन यदि कोई बन्दी बन कर आता तो सब मिल कर माल जमा करके उसका बदला देकर कैद से उसको छुड़ाते जैसा आने वाली आयत में आता है।

3. अर्थात अपनी क़ौम गैर के हाथ में फंसती तो छुड़ाने हेतु तत्पर, लेकिन स्वयं उनको सताने और उनका गला काटने हेतु लालायित रहते। यदि अल्लाह के आदेश पर चलते हो तो दोनों जगह चलो।

4. "ऐसा करे" अर्थात कुछ आदेशों को माने और कुछ का इन्कार, इसलिए कि आस्था (ईमान) का विभाजन संभव नहीं तो अब कुछ आदेशों को मानने वाला भी स्पष्ट रूप से काफिर होगा। केवल कुछ आदेशों पर आस्था रखने से कुछ ईमान नसीब न होगा। इस आयत से साफ मालूम हो गया कि यदि कोई व्यक्ति शरीअत के कुछ आदेशों को मानता है और

शेष पृष्ठ ....7 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

तौबा

—अमतुल्लाह तस्नीम

विद्वान (उलमा) एक मत हैं कि हर गुनाह पर तौबा वाजिब है। यदि गुनाह अल्लाह और बन्दे के बीच है, किसी व्यक्ति से सम्बन्धित नही है तो उसकी तीन शर्तें हैं, पहली ये कि गुनाह से रुक जाए, दूसरी ये कि अपने कृत्य पर लज्जित हो, तीसरी ये कि इरादा करे कि गुनाह की ओर कभी न पलटेगा। यदि इन तीन शर्तों में कोई शर्त पूरी न हुई तो तौबा सही नहीं है। यदि पाप बन्दों से सम्बन्धित है तो चार शर्तें हैं, तीन वही जो ऊपर बयान हो चुकी है, चौथी ये कि जिसका हक़ मारा (जुर्म किया) हो उसी से मुआफ करवाए, यदि धन हो तो उसको वापस कर दे। यदि आक्षेप आदि का कोई दण्ड उस पर अनिवार्य हो गया हो तो उसको अवसर प्रदान करे या परोक्ष निन्दा की है तो उससे मुआमला साफ कर ले।

"क़ुर्आन"

अनुवादः "ऐ ईमान वालो! अल्लाह की तरफ तुम सब मिलकर तौबा करो, शायद कि तुम सफल हो जाओ"। (सूरः नूर)

अनुवादः "अपने रब से बख्शिश चाहो, फिर उसकी तरफ तौबा करो"। (सूरः हूद)

अनुवादः "ऐ ईमान वालो! अल्लाह की तरफ सच्ची तौबा करो" (सूरः तहरीम)।

"हदीस"

आप सल्ल0 दिन में 70-70 बार तौबा व इस्तिग़फार करते थे-

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से सुना है कि वह कहते थे कि अल्लाह की कसम! मैं अल्लाह से बख्शिश चाहता हूँ और दिन में सत्तर बार से अधिक तौबा करता हूँ। (बुखारी)

एक सहाबी से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया कि ऐ लोगो! अल्लाह से तौबा करो और बख्शिश चाहो, निःसन्देह मैं दिन में सौ बार तौबा करता हूँ। (मुस्लिम)

अल्लाह की खुशी बन्दे की तौबा से

हज़रत अबू हम्जा रज़ि0 और हज़रत अनस बिन मालिक अन्सारी (सेवक हज़रत मुहम्मद सल्ल0) से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने कहा कि अल्लाह अपने मोमिन बन्दे की तौबा से बहुत खुश होता है।

(बुख़ारी-मुस्लिम)

मुस्लिम की एक रिवायत में है कि अल्लाह अपने मोमिन बन्दे की तौबा से इतना खुश होता है जैसे कि वह सवार जिसकी सवारी खाना-पानी समेत किसी वीरान मैदान में खो जाए और वह मायूस होकर एक पेड़ के नीचे सो जाए, जब आँख खुले तो देखे कि वह सवारी खड़ी है, अतः वह सवार लगाम पकड़ कर खुशी के मारे यूँ कहने लगे कि ऐ अल्लाह! तू मेरा बन्दा है, मैं तेरा रब हूँ। और ये गलती मारे खुशी के उससे हुई। (मुस्लिम)

तौबा का दरवाज़ा क़यामत तक खुला रहेगा-

हज़रत अबू मूसा अब्दुल्लाह बिन कैस अश्अरी रज़ि0 से रिवायत है कि वह हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से रिवायत करते हैं कि आप सल्ल0 ने फरमाया कि

शेष पृष्ठ .....19 पर

आशूरा का दिन

डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

मुहर्रम का महीना हिज्री कलेण्डर का पहला महीना है। यह महीना हमारे हुज़ूर सल्ल0 की आमद से पहले अरबों में खास कर जज़ीरतुल अरब (अरब द्वीप–सऊदी अरबीया) में पहले से मौजूद था और इसकी गिनती हराम (सम्मानित) महीनों में थी। अरब इस महीने में लड़ना–झगड़ना नाजाइज़ (वर्जित) ठहराते थे। अगरचि नबी सल्ल0 ने मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा रबीउल अव्वल में हिजरत फरमाई थी लेकिन दौरे फारूक़ी में सहाब–ए–किराम के इत्तिफाक़ से (सह पर) तै पाया कि मुसलमान अपनी तक्वीम (कलेण्डर) हिज्री सन् से जोड़े और उसका पहला महीना मुहर्रम हो।

अल्लाह की मसालिहत मुहर्रम की 10 तारीख़ में बड़ी अहम (महत्वपूर्ण) घटनाएं घटीं जिन में अल्लाह ने अपने पसन्दीदा बन्दों पर बड़ा करम फरमाया, उनमें से मशहूर हज़रत नूह अलै0 की कश्ती का तूफान से नजात पा कर खुशकी पर लगना, और हज़रत इब्राहीम अलै0 पर आग का ढण्डा होना, और सबसे अहम और सहीह तौर पर साबित (सिद्ध) हज़रत मूसा अलै0 का समन्दर पार हो कर फिरऔन के जुल्म से नजात पाना और फिरऔन का अपनी फौज के साथ डूब जाना है। इसी के शुक्रिये में यहूदी रोज़ा रखते थे। हमारे नबी सल्ल0 जब हिजरत करके मदीना तय्यिबा तशरीफ लाए और आपको मालूम हुआ कि यहूद 10 मुहर्रम को रोज़ा रखते हैं इस लिए कि हज़रत मूसा अलै0 को उस रोज़ फिरऔन के जुल्म से नजात मिली थी तो हमारे हुज़ूर सल्ल0 ने फरमाया हम मुसलमान इस का जियादा हक रखते हैं कि शुक्रिये के तौर पर उस रोज़ रोज़ा रखें चुनांचि तमाम सहाब–ए–किराम को हुक्म दिया कि इस रोज़ रोज़ा रखा करें, तमाम सहाबा ने उस रोज़ रोजा रखना शुरु कर दिया, इस को आशूरा का रोज़ा कहते हैं। पहले यह फर्ज़ था लेकिन जब रमज़ान के रोज़े फर्ज हुए तो इसकी फर्जीयत खत्म हो गई और यह सुन्नत करार पाया। फिर चूंकि हुज़ूर सल्ल0 ने एक मौक़े पर फरमाया था कि यह रोजा यहूद भी रखते हैं इसलिए आइन्दा उनसे फर्क करने के लिए 10 मुहर्रम के आगे या पीछे एक रोजा बढ़ा क़र दो रोज़े रखा करुंगा। लिहाजा मुसलमानों ने 10 के साथ एक दिन मिला कर रोजा रखना अपनाया लेकिन मालूम हुआ कि यहूद अब सिरे से यह रोजा नही रखते इसलिए कुछ उलमा का कहना है कि एक रोज मिलाने की इल्लत न रही इसलिए अब सिर्फ 10 मुहर्रम का रोज़ा रखा जा सकता है लेकिन अगर कोई मिला कर रखे तो कोई हरज नहीं बल्कि ज़ियादा सवाब पाएगा।

अफसोसनाक (दुखमय):

अल्लाह की मसलहतों को अल्लाह ही जानता है, इसी आशूरा के रोज़ सन् 61 हि0 में बड़ा दुख देने वाला हादिसा हुआ, हकीकत के एअ़तिबार से यह भी अल्लाह के एक महबूब (प्रिय) बन्दे पर बड़ा इनआम (पुरस्कार) हुआ लेकिन बड़ा ही दर्दनाक हादिसा था वह यह कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के महबूब नवासे हज़रत

हुसैन रज़ि0 इसी रोज शहीद कर दिये गये इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन, यही नहीं कि वह अकेले शहीद किये गये बल्कि उनके साथ लगभग उनके 72 साथी भी शहीद किये गये जिन में 17 हजरात उनके खान्दान से तअल्लुक रखते थे। यह शहीद करने वाले कोई बाहर के दुशमन न थे उनके नाना का कल्मा पढ़ने वाले मुसलमान कहलाने वाले ही थे। हुआ यह कि :

जब हज़रत मुआविया रज़ि0 का इन्तिक़ाल हुआ तो उनका बेटा यजीद तख़्ते हुकूमत पर बैठा, और उस ज़माने की रिवायत के मुताबिक लोगों से बैअ़त ली, हज़रत हुसैन रज़ि0 उस वक्त मदीना तय्यिबा में थे, यजीद ने हाकिमे मदीना को हुक्म दिया कि वह हज़रत हुसैन रज़ि0 से उसके लिए बैअ़त ले, हाकिमे मदीना ने हज़रत हुसैन रज़ि0 को बुला कर बैअ़त चाही, आप यजीद की खिलाफत से मुत्तफिक़ न थे, उनका जो मुकाम था उनको इस का हक़ था, हाकिमे मदीना के सामने बैअ़त से इन्कार न किया मगर मुहलत मांगी, हाकिम ने मुहलत दे दी आप रातों रात मक्का मुकर्रमा रवाना हो गये, यही मुआमला अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर से हुआ वह भी मक्का मुकर्रमा चले गये।

मक्का मुकर्रमा पहुँच कर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर तो अपनी कियादत की राह हमवार करने लगे और अपने लिए ताक़त जोड़ने लगे हज़रत हुसैन इबादत व रियाज़त में मशगूल रहे मगर यह फिक्र ज़रूर थी कि हाकिमे वक्त इन्तिकाम की तदबीरें कर सकता है, उधर कूफ़ा के लोगों ने आपको कूफ़े की कियादत संभालने की दअ़वत बड़े जोर शोर और बड़े वादों के साथ दी यहाँ तक कि हज़रत का दिल उस ज़ानिब माइल हो गया, हालात मालूम करने के लिए अपने चचा जाद भाई मुस्लिम बिन अकील को भेजा, इत्तिला आई कि हालात साजगार हैं, आपने कूफा का इरादा कर लिया और 8 जिलहिज्जा को अपने खैर ख्वाहों के रोकने के बावजूद कूफा रवाना हो गये और औरतों के साथ रवाना हुए, अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 जैसे अपने घर के खैर ख्वाह ने बड़ी मिन्नत व समाजत से रोका लेकिन आप रवाना हो गये।

उधर यजीद को जब कूफा का हाल मालूम हुआ तो उसने कूफा का हाकिम उबैदुल्लाह बिन जियाद को मुकर्रर कर के हालात से निपटने की हिदायत दी, जालिम उबैदुल्लाह बिन जियाद ने कूफा के हालात तरगीब व तरहीब से बदल डाले और मुस्लिम बिन अकील को कत्ल कर दिया।

हज़रत हुसैन रज़ि0 कूफा के रास्ते में थे कि यह खबर आई बड़ा दुख हुआ शायद मक्का वापस हो जाते लेकिन हज़रत मुस्लिम बिन अकील के भाइयों ने कहा हम तो न लौटेंगे, बदला लेंगे या जान देंगे, हज़रत हुसैन रज़ि0 ने भी यही इरादा कर लिया, औरतें भी साथ चलती रहीं कैसी जुरअत थी और कैसा तवक्कुल था। आगे बढ़ कर यजीद की एक हज़ार फौज ने आप को घेर लिया, अगरचि यजीदी फ़ौज ने ज़ुहर की नमाज़ आपके पीछे पढ़ी मगर कूफा की तरफ जाने से रोक दिया, हिजाज़ की तरफ जाने से भी रोक दिया यहाँ तक कि करबला के मैदान में हज़रत हुसैन रज़ि0 ने पड़ाव डाल दिया यह 2 मुहर्रम थी, जानिबैन से बात होती रही, आखिर में हज़रत हुसैन रज़ि0 ने कहा कि मुझे या तो हिजाज़ वापस जाने दो या यजीद के पास जाने दो, या किसी सरहद की जानिब जाने दो, मौके की फौज और उसके सरदार इस पर राज़ी नज़र आ रहे थे मगर उबैदुल्लाह बिन

जियाद बद निहाद ने एक न सुनी और उसने कहलाया कि या तो वह यजीद के लिए मेरे हाथ पर बैअत करे या फिर उनको घेर कर क़त्ल कर दो। फौज ने फौजी उसूलों पर अमल किया और इन 72 लोगों का घेरा तंग कर दिया। अफ्सोस सद अफ्सोस फौज ने अपने आर्ज़ी हाकिम का तो लिहाज़ किया मगर अहकमुल हाकिमीन का लिहाज़ न किया, यह भी न सोचा कि हम नमाज़ में जो दुरूद पढ़ते हैं उसमें कहते हैं अल्ला हुम्मा सल्लि अला मुहम्मद व अला आलि मुहम्मद और हज़रत हुसैन रज़ि0 महबूब तरीन आले मुहम्मद हैं। लेकिन इसको क्या किया जाए कि जिन का मुकद्दर जहन्नम हो चुका था वह कैसे इस तरह की बात सोचते बहर हाल एक भारी फौज ने हज़रत हुसैन रज़ि0 को घेर लिया और तीर व तलवार से हमला करके हज़रत हुसैन और उनके साथियों को शहीद कर दिया इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

अल्लाह की मसलहत हज़रत जैनुल आबिदीन अगरचि 22 वर्ष के थे मगर बीमार थे इसलिए वह मैदान में न आये और वह बच रहे उन्हीं से हज़रत हुसैन की नस्ल चली। हज़रत का सर जुदा कर दिया गया और औरतों के साथ उसे पहले कूफा इब्ने जियाद के यहां ले जाया गया फिर दमिश्क यजीद के दरबार में पहुंचाया गया, अगर्चि यजीद ने इजहारे ग़म किया, इब्ने जियाद पर लानत की मगर उसको कोई सजा न दी, काफिले का इकराम किया कुछ दिन मेहमान रख कर बा इज्जत मदीना तय्यिबा पहुंचा दिया।

अगरचि यह वाकिया बड़ा दर्दनाक है मगर नतीजे के ऐतिबार से शहीदों का जो दरजा मिला वह अल्लाह का बड़ा इनआम है इसी तरह इस वाकिय से उम्मत को जो दुख पहुंचा उससे उम्मत को भी सवाब का इनआम मिला इस तरह यह आशूरा का दिन इस दर्दनाक वाकिए के बावजूद अल्लाह के महबूब बन्दों के लिए इनआम व इकराम ही का रहा। इस वाकिए में यह सबक़ है कि जिस बात को यक़ीन से हक़ सकझे उस पर जमे रहें और किसी ताकत की परवाह न करे अगर इसमें जान जाए तो भी परवाह न करें इन्शाह अल्लाह शहादत का दरजा मिलेगा।

इलाही मुझे भी शहादत नसीब
यह अफ़ज़ल से अफ़ज़ल इबादत नसीब

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा .....

जो आदेश उसके मन और तबीयत तथा मंशा के विपरीत हो उसको न माने तो कुछ आदेशों पर आस्था रखना उसको कोई लाभ नहीं दे सकता।

5. अर्थात सांसारिक लाभ को परलोक के मुक़ाबले में स्वीकार किया, इसलिए कि जिन लोगों से वादा किया था उसको दुनिया के ख्याल से निभाया और अल्लाह के जो आदेश थे उनकी परवाह न की, तो फिर अल्लाह के यहाँ ऐसे लोगों की कौन सिफारिश या हिमायत कर सकता है।

6. मुर्दों का ज़िन्दा करना, सफेद दाग और कोढ़ आदि के रोगियों का स्वस्थ हो ज़ाना, परोक्ष (ग़ैब) की ख़बरें बताना, ये हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के खुले मोअजिज़े (ईश्वरींय चमत्कार) हैं। और रूहुल कुदुस कहते हैं हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम को जो हर समय उनके साथ रहते थे अथवा इस्मे आजम की जिसकी बरकत से मुर्दों को ज़िन्दा करते थे।

7. जैसा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को झूटा कहा।

8. जैसा कि हज़रत जकरिया अलै0 और हज़रत यह्या अलै0 की हत्या की। ❑❑

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफरान नदवी

मेराज की घटना, बैअते अक़बा, मदीने की हिजरत— पिछले सात साल के विरोध और तकलीफ़ों को झेलते हुए आप के दिल पर जो बोझ महसूस होता था उसमें इज़ाफ़े के हालात पैदा हो जाने के बावजूद आप का अपने खुदा पर भरोसा और मुस्तक्बिल (भविष्य) में बेहतर हालात के वाद—ए—इलाही का जो यक़ीन था वह आपको संभाले हुए था, बहरहाल फिर भी इन्सान होने के नाते आपके दिल पर बोझ पड़ता था, अगरचे आपको यह सहारा हासिल था कि जो कुछ हुआ और जो हो रहा है, वह सब खुदा की तरफ़ से है, हालात की शिद्दत हो या तस्कीन की कोई सूरत हो, तक़दीरे इलाही के अनुकूल है, शायद तक़दीरे इलाही की तरफ़ से ही यह था कि जिन कठिनाइयों से आपको गुज़ारा जा रहा था, वह आपके साहस व संकल्प के लिए और अल्लाह के वादे पर यक़ीन को मज़बूत करने में सहायक है।

बहरहाल जब आपकी हिम्मत व इरादा और वाद—ए—इलाही के पूरा होने का मज़बूत यक़ीन अपने पूरे मेयार (स्तर) पर पहुंच गया कि आप इस तरह के तमाम सहारों के ख़त्म हो जाने पर भी जिनसे आपको सख़्त हालात का मुक़ाबला करने में कुछ न कुछ मदद मिल रही थी, आपके मज़बूत यक़ीन, निरन्तर अमल और सब्र व रज़ा की बरक़रारी में फ़र्क़ नहीं आया, अगरचे हालात की सख़्ती से दिल बेचैन भी हो जाता था, अल्लाह तआला ने आपको तक़्वियत पहुँचाने और ढारस बंधाने के लिए और आपके रंजीदा दिल को खुश करने के लिए आपको आखिरत में जो होने वाला है और अल्लाह के नज़दीक आपका जो मुक़ाम है उसका हक़ीक़ी मन्ज़र (वास्तविक दृष्य) आपको मेराज के ज़रिए दिखा दिया और यह तक़रीबन उसी तरह हुआ जिस तरह हज़रत इब्राहीम अलै0 के साथ एक तरह से पेश आया था कि जब हज़रत इब्राहीम अलै0 ने अल्लाह की रज़ा के लिए अपनी महबूबतरीन चीज़ों की कुर्बानी दे दी जिसमें वतन की कुर्बानी, बीवी बच्चे से मुहब्बत की कुर्बानी और फिर नौजवान और होनहार बेटे की कुर्बानी की अपनी हद तक तअमील कर दी, इस तरह उन्होंने उन इम्तिहानात में कामयाबी हासिल कर ली, लेकिन उन्होंने अपनी मज़ीद तसकीन के लिए अल्लाह तआला से दरख्वास्त की कि "यह देखने का जी चाहता है कि आप मुर्दों को किस तरह ज़िन्दा करेंगे" जवाब आया "क्या तुम्हें यक़ीन नहीं? उन्होंने कहा "क्यों नहीं, यक़ीन पूरा है, लेकिन दिल की तक़वियत के लिए देखना चाहता हूँ कि अल्लाह तआला किस तरह मुर्दे को ज़िन्दा करते हैं, तो अल्लाह तआला ने अनको इस का मन्ज़र भी दिखा दिया।

इसी तरह हुज़ूर सल्ल0 ने जब हुक्मे इलाही पर अमल और रज़ा बिलक़ज़ा के उस मुक़ामे बलन्द को हासिल कर लिया तो अगरचे उन्होंने मुतालबा नहीं किया, लेकिन अल्लाह तआला ने उनके दिल की ताक़त के लिए उनको आखिरत के मुक़ाम व मन्सब का मुशाहिदा करा दिया और अपने क़रीब तक बुलाकर इज़्ज़त अता फ़रमा दी, आप उस रात "हरम शरीफ" ही के अन्दर आराम कर रहे थे कि हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम आए और कहा चलिए आप बुलाए गये हैं, और

रातो रात आपको वहां से शाम (फिलिस्तीन) के शहर बैतुल मुक़द्दस की मस्जिदे अक़्सा ले जाया गया, वहां अल्लाह तआला ने पिछले सारे नबियों से आपको मिलाया फिर आपने उनकी इमामत की और इस तरीक़े से आपको सारे नबियों के सरदार होने की हैसियत हासिल हो गई और इसको आपने अपनी आँखों से देखा और आपको आसमानों की तरफ़ सफ़र कराया गया, और अर्शे इलाही से क़रीबतर जहां तक आपका पहुंचाना अल्लाह को मन्जूर था वहां तक ले जाया गया, और रब्बुल आलमीन से कलाम करने की और तन्हाई में क़रीब होने की सआदत (सौभाग्य) हासिल कराई गई।

अल्लाह तआला ने हक़ीक़त में इन्सान को ऐसी मख़लूक़ बनाया है जिसमें भौतिक व शारीरिक ढाँचे और उसके असरात जो ज़ाहिरी एहसासात के ज़रिए देखे और समझे जा सकते हैं, इस के साथ मलकूती (फ़रिश्तों) वाले हालात अलग भी रखे हैं, जिनको मलकूती एहसासात से ही समझा जा सकता है और इसका मुशाहिदा (देखना) असलन इन्सान की दूसरी ज़िन्दगी ही में किया जा सकता है लेकिन दुनियावी ज़िन्दगी में कभी कभी उन हालात का मुशाहिदा (अवलोकन) अल्लाह तआला अपने नबियों को करा देता है, यह हालात क्या हैं जो अपना एक तरफ़ ज़ाहिरी रुख़ रखते हैं जो देखे और सुने जा सकते हैं और दूसरी तरफ़ अनदेखे रुख रखते हैं जो इन दुनियावी आँखों और कानों से नहीं जाने जा सकते, यह मिसाल के तौर पर इस तरह हैं कि हलाल माल इन्सान के ज़ाहिरी और भौतिक एहसासात के लिहाज़ से हराम माल ही की तरह महसूस होता है लेकिन मलकूती (पवित्रता) के दायरे में हलाल माल पाक और साफ़ सुथरी कैफ़ियत रखता है और हराम माल गन्दगी और दुर्गन्ध वाला होता है, इसी तरह नेक आमाल इन्सान के ज़ाहिरी एहसासात में बुरे आमाल की तरह मालूम होते हैं, लेकिन अन्दरूनी एहसासात में जिसकी पहचान नबियों के ज़रिये की गई है, तकलीफ़ देह और मुसीबत के आमाल होते हैं, जिसकी मिसालें कुर्आन मजीद और हदीस शरीफ़ में बताई गई हैं, उदाहरणतः सोने चांदी के हराम तरीक़े से हासिल करने को बताया गया है कि आख़िरत में जहां बातिनी खुसूसियत ज़ाहिर होगी वहां वह हराम चांदी और सोना गर्म लोहे की तरह होंगे, जिससे उनसे फ़ाइदा उठाने वाले के पहलू और पेशानी दागे़ जाएंगे। इसी तरह हदीस शरीफ़ में आया है कि कोई किसी ज़मीन पर नाजाएज़ तरीक़े से क़ब्ज़ा करले तो आख़िरत में तौक बना कर उंसकी गर्दन में डाली जाएगी, इसी तरह सूद और नाजाएज़ माल की हैसियत पाख़ाने जैसी हो जाएगी। इस तरीक़े से इन्सान की ज़िन्दगी के आमाल दो पहलू रखते हैं, एक पहलू इस दुनिया का ज़ाहिरी है जो अपनी ज़ाहिरी कैफ़ियत रखता है और दूसरा पहलू बातिनी (अन्दरूनी) है जो अल्लाह के रसूलों के ज़रिए बताया गया है, जिससे दूसरी ज़िन्दगी में वास्ता पड़ेगा। हुजूर सल्ल0 को नबी होने की बिना पर इस पहलू से जानकारी विश्वसनीय रूप से प्राप्त थी, फिर भी ज़्यादा तक़्वियत (मज़बूती) के लिए मेराज में आपको उनका मुशाहिदा (अवलोकन) करा दिया गया जो इल्मुल यक़ीन (विश्वास के ज्ञान) से हक़्कुलयक़ीन (विश्वास की वास्तविकता) तक पहुंच गया, इस तरह आप नेकियों का जो उपदेश देते थे वह आपकी देखी हुई चीज़ बन गई, इस सिलसिले में इन्सानों को बताना था कि तुम जो कुछ

करते हो उसके सिर्फ़ ज़ाहिरी पहलू से सन्तुष्ट न हो जाओ, क्योंकि यह दुनिया की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी तक ही तुम्हें महसूस होता है, और आख़िरत की जो न ख़त्म होने वाली ज़िन्दगी है उसमें उसका बातिनी (अन्दरूनी) पहलू सामने आएगा, फिर वहां उससे बचने की कोई सूरत न होगी, यहीं से उससे बचने की फ़िक्र कर लो।

बहरहाल आपको जो चीज़ें दिखाई गईं उनका तज़किरा (उल्लेख) रवायात में आया है, मिसाल के तौर पर जैसा कि सुनन अबूदाऊद की रिवायत है, जिसमें हुज़ूर सल्ल0 ने बताया कि जब मेरी मेराज हुई तो मेरा गुज़र ऐसे लोगों के पास से हुआ जिनके तांबे के नाखून थे, जिनसे वह अपने चेहरे और सीनों को नोच रहे थे, मैंने कहा ऐ जिब्रईल! यह कौन हैं? उन्होंने कहाः यह वह लोग हैं जो लोगों का गोश्त खाते थे और लोगों की नामूस (मर्यादा) का ख़्याल नहीं करते थे अर्थात ग़ीबत करते और बदनाम करते थे।

सीरत इब्ने हिशाम और तफ़्सीर इब्ने कसीर में और भी लोगों का ज़िक्र है, मसलन यतीमों का हक़ मारने वाले, सूदख़ोर, ज़ानी (व्यभिचारी) आदि, जिनका बुरा हाल उनके अपने–अपने आमाल के ऐतिबार से आप पर ज़ाहिर हुआ। इन बातों के अलावा अच्छे हाल वाली भी कुछ बातें दिखाई गईं, आपको जन्नत में आपके क़याम की जगह दूर से दिखाई गई, आपने करीब से देखना चाहा तो बताया गया कि इस वक़्त इतना ही काफी है।

शबे मेराज में आप सल्ल0 को अल्लाह के यहां से तीन अतिये (पुरस्कार) दिये गए, सूरह बक़रा की आख़िरी आयतें, जिनमें इस्लाम के अक़ाएद व ईमान की तकमील और मुसीबतों के ज़माने के खात्मे की खुशख़बरी है। रहमते खास ने शुभ सूचना दी कि उम्मते मुहम्मदी में से हर एक जिसने शिर्क न किया हो उसे करम और मग़फिरत से सम्मानित किया जाएगा, और आवाज़ आई : उम्मत पर पचास वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ की गई।

बुखारी में इब्ने अब्बास से रिवायत है कि शबे मेराज में दज्जाल भी आप सल्ल0 को दिखाया गया। मेराज की तफ़्सील कुर्आन मजीद में भी बयान की गई है। एक तो सूरतुल इसरा में इसका ज़िक्र है, सूरतुन्नज्म में इसकी तफ़्सील इस तरह बयान की गई हैः–

"कसम है सितारे की जब वह गिरे कि तुम्हारा रफ़ीक़ (मुहम्मद सल्ल0) न तो भटका है और न वह यह बातें अपने दिल से बना कर कहता है, बल्कि वह तो वही है जो उसको बताया जाता है, उसको उसने जो बड़ी ताक़तों वाला और बड़ी अक़्ल वाला है बताया है वह आसमान के ऊँचे किनारे सीधा हो कर नमूदार (प्रकट) हुआ, फिर क़रीब हुआ और झुका तो दो कमानों का फ़ासला रह गया, इस से भी कम, फिर उसने बन्दे से जो बातें कीं, दिल ने जो देखा उसने झूट बयान नहीं किया, ऐ लोगो! क्या वह जो देखता है उस पर तुम उससे झगड़ा करते हो, उसने बिला शुब्हा दोबार भी उसको उतरते देखा सिदरतुल मुन्तहा दरख़्त के मुक़ाम के पास जिसके क़रीब (नेक बन्दों) के रहने की बहिश्त है, जब उस दरख़्त पर छा रहा था, न नज़र बहकी न उचटी, इसलिए यक़ीनन अपने परवरदिगार की बड़ी निशानियां देखीं"।

मेराज की रात के बाद सुबह आप ने अपनी मेराज का तज़किरा

शेष पृष्ठ .....30 पर

देवनागरी लिपि में उर्दू

इस्लाम में तअ़लीम व तरबियत का मक़ाम

—अनु0 मन्ज़र सुबहानी

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी

तअ़लीम व तरिबियत का अमल गुज़िश्ता अदबार में एक इबादत की हैसियत रखता है, और लोग इसको फज़ीलत व सआ़दत हासिल करने का ज़रिया समझते थे और शरीफाना इन्सानी तआल्लुक़ात को मुस्तहकम करने और इन्सान को अल्लाह से जोड़ने का एक मज़बूत ज़रिया करार दिया जाता था, यही वजह है कि इन्सानी तारीख़ इन अज़ीम शख्सियतों के फैज़े बे पायाँ का नतीजा है और इन्सानी ज़िन्दगी को बा मक़सद बनाने में इनका किरदार बहुत अज़ीम है, अगर माज़ी की तरफ एक निगाह डालें तो हमें इन्सानी ज़िन्दगी में मक़सदीयत की रूह फ़ूँकने और निहायत वसीअ़ पैमाने पर ख़ैर को फैलाने और शिर्क को मिटाने की मुख्लिसाना कोशिशें निहायत वाज़ह तौर पर नज़र आयेंगी, जहाँ माल व जाह और मनसब व कुर्सी का कोई गुज़र नहीं था। और तअ़लीम व तर्बियत के पेशा को इख़्तियार करने और मिसाली सीरत व किरदार के आला तरीन मक़ाम तक पहुँचने का हक़ीकी सबब यही उसूले इल्म का सच्चा जज़बा था। इसी फितरी बुनियाद पर तअ़लीम व तर्बियत निज़ाम वज़अ़ किया जाता था और इसमें हर चीज़ की रेआयत रखी जाती थी, माहौल और मआशरती फज़ां क़ौमों और जमाअ़तों के अक़्ली और फिकरी मेआर को कभी नज़र अन्दाज़ नहीं किया गया इसी बिना पर तअ़लीम व तर्बियत का हक़ीकी मक़सद माहीरीने तअ़लीम की नज़रों से कभी ओझल नहीं होने पाया और निसाबे तअ़लीम का नुमायां वस्फ मक़सदीयत की रूह हुआ करती थी, और दुनिया में बसने वाले तमाम क़ौमों और एहसासे ज़िम्मेदारी से मोज़इयन इन्सानी मआशरे में रहने वाले तमाम अनासिर यहां तक की बड़ी–बड़ी हुकूमतों का यही मक़सद हुआ करता था और यही वह ज़रिया था जिससे बैनुल अक़वामी तआ़ल्लुक़ात मज़बूत होते थे ख़्वाह वह किसी नोइअ़त के हों, सियासी, सक़ाफती, तमद्दुनी और आलमी पैमाने पर तमाम क़ौमों के दर्मियान एअतमाद व ऐअतबार की फज़ां क़ायाम हुआ करती थी, और कभी भी ऐसा नहीं हुआ कि तअ़लीम व सक़ाफत के वसाइल और उसके निज़ाम को ना पसन्दीदा जज़्बात के उभारने और इन्तक़ाम की प्यास बुझाने के लिए इस्तेमाल किया गया हो और न कभी तिजारती सामान की तरह इसको बेचने और मार्केटिंग के लिए इस्तेमाल किया गया।

लेकिन इन्तेहाई ताअ़ज्जुब खेज़ और ग़ैर इन्सानी सूरते हाल यह है कि इस्राईल ने अपने मक़बूजा इलाक़ा में यहूदी बच्चों और नौजवानों के लिए जो निसाबे तअ़लीम मुक़र्रर किया है वह अरब और मुसलमानों से बेहिसाब नफ़रत बुग्ज़ और दुशमनी की बुनियाद पर कायम है हालांकि इल्म व तहज़ीब और साइन्स व टेक्नालोजी के इस तरक्की याफ़्ता दौर में ऐसे ख़तरनाक और नाक़ाबिले क़ुबूल निसाब को जारी करने की कहीं भी कोई गुन्जाईश नहीं है। लेकिन वाक़िया यह है कि इस्राईल ने ऐसे मबगूज निसाबे तअ़लीम को अपने आहिनी पंजों में जकड़ रखा है और इस से दस्तबर्दार होने के बजाय हर मौक़ा पर इसका मुज़ाहिरा करता है, बअ़ज़ क़ाबिले एतमाद शख्सियतों ने इस

इस्राईली निसाबे तअ़लीम का जायज़ा लिया है और इसके बअज़ ख़तरनाक पहलुओं की निशानदही की है इनमें सबसे ख़तरनाक बात यह है कि हर इस्राईली बच्चे के एक कान में यह सुर फूँका जाता है कि यहूदी पूरी दुनिया में सबसे ज़्यादा बुलन्द और पसनदीदह शख्सियत के मालिक हैं, और बच्चे के दूसरे कान में उम्मते अरबिया के बारे में निहायत ज़िल्लत आमेज़ और रज़ालत से भरपूर यह आवाज़ पहुंचाई जाती है कि अरब क़ौम दुनिया की सबसे ज़लील तरीन मख़लूक़ है और कीड़े मकोड़े से ज़्यादह इनकी हैसियत नहीं है, लिहाज़ा इनको क़त्ल करना इनतहाई ज़रूरी अमल है, जब यहूदी बच्चा स्कूल जाता है तो निसाब की मुकर्ररह किताबों के अन्दर यह पढ़ता है कि यहूदी क़ौम अल्लाह की मख़लूक़ में सबसे ज़यादा अफज़ल और अरब क़ौम सबसे ज़्यादा ज़लील और नजिस है और वह हर तरह की इज़्ज़त व शराफत से आरी है, लेहाज़ा इसको गुलाम बनाना और इसके साथ गुलामों का मोआमला करना एक लाज़मी क़ौमी फरीज़ा है, और ज्यों–ज्यों यहूदी बच्चा अपनी तअ़लीम में आगे बढ़ता जाता है, अपनी निसाबी किताबों में यह पढ़ता है कि अरब क़ौम डाकू हैं, दहशत पसन्द है, शर व फसाद के फैलाने वाले हैं, इनके आबा व अजदाद ने यहूदियों को इस क़दर नुक़सान पहुंचाया है कि इसकी तलाफी ना मुमकिन है, इस बिना पर इनके साथ बुरा सुलूक़ करना इबादत की एक क़िस्म है, और जब भी इसकी निसाबी किताबों में लफ़्ज़ अरब आता है तो इनका वस्फ बयान किया जाता है कि वह चोर और डाकू हैं और हलाल की औलाद नहीं हैं, और वह अपने आबा वअजदाद के ज़माने से यहूदियों के खून के प्यासे हैं।

निसाबी किताबों के ज़रिए वह अपनी औलाद को कानूने हरबो ज़रब से वाक़िफ कराते हैं ताकि वह उम्मते अराबिया से इन्तक़ाम ले सकें, यही वजह है कि सेकेन्ड्री स्कूल के मज़ामीन पूरे करने के बाद हर तालिब इल्म के लिए अस्करियत का सीखना लाज़मी मज़मून की हैसियत रखता है और लाज़िम हो जाता है कि तलबा और तालिबात अस्करी तरबियत इस्राईली माहीरीने जंग से हासिल करें वर्तानिया से शाया होने वाले "इन्टरनेशनल हराल्ड तरीबेन" अख़बार ने अपने 18, दिसम्बर 2004 के शुमारा में एक रिपोर्ट शाया की है, इसमें इस्राईल के निसाबे तअ़लीम का जायज़ा लिया गया है और जायज़ा की रिपोर्ट में मज़कूर है कि इस्राईली निजामे तअ़लीम व तर्बियत और इसका निसाब हद से ज़्यादा ख़तरनाक है।

इस हक़ीक़त का पता लगाने के लिए पाकिस्तान के मारूफ सहाफी कुदरतुल्लाह साहब ने एक ग़ैर मुस्लिम की हैसियत से इस्राईल का दौरा किया वह अक़वामे मुत्तहेदा के मातहत युनिसेफ तन्ज़ीम के ज़रिए वहां पहुंचे और इस्राईली निसाबे तअ़लीम की इन किताबों को हालिस करने में कामियाब हो गयें जो मुसलमानों और अरबों के ख़िलाफ निहायत ख़तरनाक मवाद पर मुश्तमिल हैं और इन किताबों को अक़वामे मुत्तहेदा के ज़िम्मेदारों के सामने पेश किया ताकि इस का तदारुक किया जा सके लेकिन वाकिया यह है कि यह क़िताबें क़सदन लापरवाही और गफलत का शिकार हो गईं और इसका कोई नतीजा नहीं निकल सका जाहिर है कि वह इनसानी मसाइल जो अरब और इस्लामी दुनिया से ताल्लुक़क रखते हों किस तरह दर खोरे एतना हो सकते हैं कि अक़वामं मुत्तहेदा का सेक्रेटरी जनरल ख़्वाह कोई भी हो लेकिन असिस्टेन्ट सेक्रेटरी जनरल हमेशा

इस्राईली होगा। और इसको नायब सेक्रेटरी जनरल लिखा और कहा जायेगा।

यहीं से मग़रिबी दुनिया की तरफ से इस्लाम के नेज़ामे तअ़लीम व तर्बियत और इसके वसाइल को बदल कर रख देने पर सख़्त इसरार और दबाव पाया जाता है और इसको मग़रिबी नेज़ामे तअ़लीम व तर्बियत के मोताबिक़ वजाअ़ करने की कोशिशें नेहायत शद्दोमद से जारी है ताकि आलमे इस्लामी के मदारिस और जमीआ़त में एक नये निसाबे तअ़लीम को तशकील दे कर इसे बिला ताखीर जारी कर दिया जाये इस मकसद का पूरा करने के लिए मग़रिब ने बहुत पहले से इस्लामी मोआशरों और सोसाईटियों में फिकरी हमले का सिलसिला जारी कर रखा है ताकि इनको असल शाहराह से हटा कर इनफरादी और इजतमाई हैसियत से लोगों के दिलों में शकूक व शुबहात के बीज बो सकें और यह साबित कर सकें कि इस्लामी नेज़ामे हयात अपनी सलाहियत खो चुका है, फिकरी हमलों का यह तरीक़ा निहायत जारिहाना अन्दाज़ में वहां के तमाम तअ़लीमी इदारों पर लाज़िम क़रार दे दिया गया है।

लेकिन हमें अज़सरेनौ इस्लाम के आदिलाना और मोतावाज़िन नेज़ामे ज़िन्दगी का जायज़ा लेना चाहिए कि वह इल्म व अकीदह और अमालो अख़्लाक़ पर मबनी है और वह दायमी तरीक़े से इन्सान को क़ियादत का अहल बनाता है और हर तरह की खुदग़रज़ी और मसलेहत बीनी से दूर है, फिर यहीं से वह उम्मते वस्त तेयार होती है जिसको पूरी दुनिया के लिए शहादत व क़ियादत की ज़िम्मेदारी अता की गई है। अल्लाह तआ़ला का फरमान है "ऐ उम्मते आदिल तुम गवाह रहो लोगों पर और रसूल गवाह रहें तुम पर (बक़रहः143)।

रही तवाज़ुन और वस्तीयत इस्लामी तहज़ीब का इम्तियाज़ है और उम्मते वस्त (उम्मते मुस्लिमां) इसकी अलमबरदार है और इसी इम्तियाज़ की बिना पर उम्मते मुस्लिमां ने तमाम क़ौमों और दीगर उम्मतों पर ज़िन्दगी के तमाम मैदानों में अपनी फौक़ियत को बाक़ी रखा और गुम करदा राहे इन्सानियत को सेराते मुसतक़ीम की नेअ़मत अता की जब कि मादी तमद्दुन के फलास्फे आलमी हैसियत से इन्सानी ज़ेहन को मसमूम कर चुके थे और महज़ वक़्ती मफाद को ज़िन्दगी का बुनियादी मक़सद बावर कराने में कामियाब हो चुके थे और सोसाइटी की तामीर और इन्सान के कायदाना मुस्तक़बिल को रौशन करने में इसका कोई किरदार बाकी नहीं रह गया था और इसके नतीजे में नौये इन्सानी के मक़ाम का ताअय्युन मुश्किल हो गया कि किस तरह वह उलूम व फनून इजतमाईयत और माआशर्ती इन्साफ और मुसवात की नोमाईन्दगी करे और सिर्फ मादी सलाहियतों को बरूयेकार लाने में अपनी तमाम ताक़त को सर्फ करे और इसी को इज़्ज़त व दौलत का मेआ़र करार दें बिल्कुल यही सूरत इस्लाम से पहले मश्रिक़ो मग़रिब की मादी तहज़ीबों में क़ायम थी और इसमें ऐसे वाकिआत पेश आये जो तारीख़ के सफहात में स्याह कारनामें की हैसियत से दर्ज हैं। और इनको पढ़ कर इन्सान की पेशानी शर्म से झुक जाती है।

इस्लाम ने इल्म और तअ़लीम व तर्बियत के तमाम गोशों ओर इसके शोबों को एक निहायत पुख़्ता बुनियाद का दरजा अता किया हे और इसी पर इस्लामी ज़िन्दगी की इमारत तअ़मीर होती है। हुज़ूरे अकरम सल्ल0 को सबसे पहली वही में जिस बात का हुक्म दिया गया वह पढ़ने का हुक्म था इसके

बावजूद कि आप सल्ल0 उम्मी थे जिस की सराहत अल्लह अल्लाह तआला ने सूरह जुमां की इस आयत में फरमा दी है "(अनुवादः वही है जिसने ना ख़ान्दह लोगों में इन्हीं में से एक रसूल भेजा जो इन्हें इसकी आयतें पढ़कर सुनाता है और इनको पाक करता है और इन्हें किताबो हिकमत सिखाता है यक़ीनन यह इससे पहले खुली गुमराहीं में थे। जुमां–2)"।

और जब आप ग़ारे हिरा में इबादत गुज़ारी में मशगूल थे जिब्राईल अमीन आप के पास आये और आप से पढ़ने की फरमाइश की, आपने फरमाया मैं पढ़ना नहीं जानता, फिर इन्होंने हुजूर अकरम सल्ल0 को अपने सीने से लगा कर ज़ोर से दबाया फिर छोड़ दिया और कहा कि पढ़िये मैंने कहा कि मैं पढ़ना नहीं जानता फिर इन्होंने दोबारह मुझे ज़ोर से सीने से लगा कर छोड़ दिया फिर कहा पढ़िए मैंने कहा मैं पढ़ना नहीं जानता इन्होंने तीसरी बार यही अमल किया और कहा कि पढ़िए अपने उस रब के नाम से जिसने पैदा किया इन्सान को ख़ून के लोथड़े से, कहा पढ़िए आपका रब बड़ा करम वाला है जिसने क़लम के ज़रिए तअ़लीम दी, जिसने इन्सान को वह सिखाया जिसे वह नहीं जानता।

यही वह हिदायतयाब पढ़ना था जिसका हुक्म नबिये करीम सलल0 को दिया गया और यही पढ़ना इल्म का वह अज़ीम सर चश्मा बना। जो ज़िन्दगी और कायनात के तमाम पहलुओं पर हावी है और तमाम उलूमों मआरिफ की बुनियाद है, इसीके ज़रिए अल्लाह की ज़ात तक पहुंचना और ज़िन्दगी की तमाम सरगर्मियों में इनसे तआल्लुक़ पैदा करना और इन्सान के कांधे पर जो ज़िम्मेदारियां रखी गईं हैं इनको अदा करने का रास्ता अमल और क़यादत के मैदान में हमवार होता है, आलमे इस्लामी और मुस्लिम अक़लीयतों के मुख़्तलिफ मुल्कों में मौजूद तमाम मदारिस व जामियात के लिए माहिरीन तअ़लीम ने जो निसाबे तअ़लीम व तरबियत वज़ाअ किया था वह उसी साफ सुथरी और मज़बूत बुनियाद पर क़ायम है, इसकी वजह यह है कि मदरसा अपनी ज़ात के एतबार से बजाए ख़ुद छोटा–मोटा मोआशरह है जैसा कि अतिया मुहम्मदुल अबराशी ने अपनी किताब "फलसफा तअ़लीम व तरबियत" में मदरसा की अहमियत को उजागर करते हुए लिखा है" मदरसा से बहतर तलबा की इजतमाई तरबियत का कोई दूसरा ज़रिआ नहीं हो सकता" मदरसा की ज़िन्दगी वह सच्ची ज़िन्दगी है जो घर और सोसाईटी को एक बनाती है और अफराद और सोसाईटी को मुफीद उन्सुर बनाती है ख़्वाह तबक़ात और माहौल का कितना और कैसा ही इख़्तिलाफ क्यों न हो, वह लिखते है "मदरसा की ज़िन्दगी हर रोज़ तलबा को ऐसे वसाइल फराहम करती है कि वह इजतमाई खूबियों और तक़ाज़ों से बहरमन्द हों इन्हीं खूबियों का अख़्लाक़ और हुस्ने मआमलात पर गहरा असर पड़ता है, अपनी आदात व ख़सायल के एतबार से तलबा हमेशा इसके मोहताज रहते हैं कि इनकी बाक़ाएदह निगहदाश्त और निगहबानी की जाय इस मक़सद को हमागीर और आसान बनाने के लिए जिन किताबों और लाज़मी मज़ामीन का इन्तख़ाब मुस्लिम माहरीने तअ़लीम की जानिब से अमल में आया वह इस्लामी तशख़्ख़ुस की तअ़मीर की ज़मानत देता है और उम्मते मुस्लिमा के अफराद को आलमे बशरी की कियादत व हिदायत की ज़िम्मेदारी के लिए तैयार करता है, चुनांचा किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह सल्ल0 का इस निसाब की तश्कील में बुनियादी किरदार है, और इसमें किसी कमी और ज़्यादती की गुन्जाईश नहीं, ख़्वाह

सियासी व इज़तमाई मसालेह इसमें रद्दो बदल के मोताक़ाज़ी हों।

निसाबी मज़ामीन में तबदीली से मुतअल्लिक़ मौजूदा हक़ायक़ इस बात के शाहिद हैं कि अब नई बुनियादों पर ऐतमाद करके आलमे इस्लामी के तअ़लीमी मराकिज़ में इसको बरुए कार लाया जा रहा है, और नया निसाबे तअ़लीमं वजाअ़ करने के लिए जो कमेटियां बनाई गई हैं वह सब इस बात पर मुत्तफिक़ हैं कि किताब व सुन्नत से इन तमाम आयतों और इबारतों को निकाल दिया जाय जिन का तअल्लुक़ यहूदो नसारा और ज़िहाद की अहमियत और इसके फज़ायल से है, इसी तरह जिन आयतों और इबारतों में बाग़ी जमाअतों और मुश्रिकीन के खिलाफ जंग करने की दाअ़वत दी गई है इनको कलअद्रम कर दिया जाये और जिन बातों से जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह की हिम्मद अफ़ज़ाई होती हो, इनसे सरफे नज़र किया जाए और जहां कहीं मुसलमानों की जिन्दगी में अख़्लाक़ी बुलन्दी और इसके हुदूदे अरबअ को फैलाने का ज़िक्र हो, जिससे ज़िन्दगी के तमाम मोआमलात में इस्लाम की अमली नोमाइन्गी का सुबूत मिलता हो, इनको निसाब के मज़ामीन से पूरी तरह ख़ारिज कर दिया जाये, निसाबी तबदीली के इस अमल को क़ाबिले ऐतबार न समझना और इसपर इतमिनान का इज़हार करना ईमानी अक़ाएद से दस्तबरदार होने के मुतारादिफ है और इसका मतलब यह हे कि एक मस्लेहत पसन्दाना सियासी इस्लाम को रिवाज दिया जाये, जिसमें ज़माना और हालात के साथ–साथ चलने की दअ़वत दी जाती हो, इस मौक़ा पर इस्लामी तारीख़ के इबतिदाई दौर का वाक़िया हमारी नज़रों के सामने फिर जाता है कि जब मक्का मुकर्रमा में मुसलमानों की तअ़दाद हाथ की उँगलियों से ज़्यादह नहीं थी इन पर हर तरह से जुल्म व अज़ाब की बारिश हो रही थी और वह ज़ालिमों के रहमो करम पर ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे लेकिन इनको यक़ीन था कि जिस इस्लाम को इन्होंने इख़्तियार किया है वह कभी इनको रुसवा नहीं करेगा। और अल्लाह की तरफ से मदद आकर रहेगी, इसके बावजूद जिन हालात ने इनको घेर रखा था वह आख़री दरजह के जुल्म व क़सावत तक पहुँच गये थे और दअ़वत की मस्लेहत का तक़ाज़ा यह था कि सरेदस्त मुसलमान कुफ्फार को इस्लाम की दाअ़वत न दें, और इनके तमाम मुश्रिकाना अन्दाज़ को ख़ामोशी के साथ देखते रहें और अल्लाह तआ़ला से नजात और रहम की दरख़्वास्त करते रहें, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम सल्ल0 को हुक्म दिया कि वह तौहीद की दअ़वत पर कभी ख़ामोशी इख़्तियार न रकें, और शिर्क व वसनियत को अन्जाम की परवाह किये बग़ैर मुस्तरद करते रहें, हालांकि शिर्क व बुत परस्ती के दाई हुज़ूर अकरम सल्ल0 और इनके मुत्तबाईन पर हर तरह के ज़ुल्म व ज़्यादती जारी रखने पर तुले हुए थे इसी दौरान वही नाज़िल होती है और हुक्म दिया जाता है कि कुफ़्फार को मुख़ातब करके साफ–साफ और निहायत ताकीद के साथ यह बता दिया जाये कि वह बुतों की इबादत कभी नहीं करेंगे, सिर्फ अल्लाह वाहिदे क़ह्हार की इबादत करेंगे, सूरह काफ़ीरून नाज़िल हुई और इसने अस्नाम परस्त और वसनियत की दअ़वत सराहत के साथ ऐलान किया के मुसलमानों का दीन उनके दीन की तरह नहीं है जिसकों उन्होंने बज़ोअम खुद दीन समझ लिया है इस वक़्त आप सूरह काफिरून कि तिलावत करें और इसके मफ़हूम व मआनी को बग़ौर समझने की कोशिश करें (अनुवादः कह दीजिए की ऐ

काफ़िरो न मैं इबादत करता हूं उसकी जिस की तुम इबादत करते हो, न तुम इबादत करने वाले हो उसकी जिसकी मैं इबादत करता हुं, और न मैं इबादत करूंगा जिसकी तुम इबादत करते हो, और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी मैं इबादत कर रहा हुँ। तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन है और मेरे लिए मेरा दीन है)।

तन्हा यही आयतें अल्लाह तआला के दीने इस्लाम से किसी हद तक भी दस्तबर्दार होने की बराअत का ऐलान नहीं करतीं, बल्कि किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह सल्ल0 दोनों किसी फर्द और जमाअत को जो अहले ईमान और सही अक़ीदा रखने वाले हों इस बात की इज़ाजत नही देती कि वह अल्लाह और उसके रसूल के फैसले में किसी किस्म का इख़्तियार इस्तेमाल करें, इस लिए कि हालात इसके मोताक़ाज़ी हैं, यह हक़ीक़त है कि किसी को अल्लाह के फैसले में तसर्रुफ करने का हक़ हासिल नहीं है बल्कि क़ायदा कुल्ली यह है कि इस्लाम के हर हुक्म को बेख़ौफ़ व ख़तर तस्लीम किया जाये और अल्लाह और उसके रसूल की सुन्नत के तमाम मोआमलात की तअ़बेदारी कुल्ली तौर पर इख़्तियार की जाये, इससे अन्दाज़ह किया जा सकता है कि जब एक ईमानदार अपनी ज़िन्दगी और मुआशरा के तामम मोआमलात में अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 के अहकाम के सामने सरनगु है और इसमें इसको किसी तसर्रुफ का इख़्तियार नहीं है, तो ईमान व अक़ीदह के मोआमलात में दस्तबर्दार होना और इसमें किसी किस्म की कमी व ज़्यादती करना किस तरह मुमकिन है।

आज इस्लामी मुल्कों के मदारिस व जामियात के निसाबे तअ़लीम में एक महसूस तबदीली का मोतालबा किया जा रहा है और किताब व सुन्नत की आयतों और इबारतों में तसर्रुफ करने का हक़ दिया जा रहा है, और मग़रिबी नई हिदायात की रौशनी में निसाबे तअ़लीम व तर्बियत तैयार करने का हुक्म दिया जा रहा है मगर यह मोतालबा इस्लाम की बुनियादी तअ़लीमात से किसी हाल में हमआहंग नहीं है और सच्ची बात तो यह है कि असल बुनियाद से दस्तबर्दार होने का मतलब इसके सिवा और कुछ नहीं है कि इस्लामी तहजीब की इमारत सतेह ज़मीन पर क़ायम है और इसकी कोई मज़बूत बुनियाद नहीं है और किसी भी अदना वाक़िए से मोतास्सिर होकर वह रूये ज़मीन पर ढेर हो सकती है।

दीन के मुआमलात में किसी भी दस्तबर्दारी का सरचश्मा ईमान की कमज़ोरी की अलामत है या अक़ीदह को पामाल करने के मोतारादिफ़ है, इसका मतलब सिर्फ यह है कि जिस अमानत को अल्लाह तआला ने आसमान व ज़मीन और पहाड़ों पर पेश किया था और इन्होंने इसका भार उठाने से इन्कार किया था, इस अमानत की ज़िम्मेदारी इन्सान ने क़बूल की थी, लेकिन अब वह इस ज़िम्मेदारी को पूरी करने से इन्कार कर रहा है, हालांकि अक़ीदह के मुतालिबात को नज़रअन्दाज़ करने और मसलेहत को पेशेनज़र रखने से कुर्आन करीम से बहुत सी सूरतों और आयतों को हिफ्ज़ करने और किताब व सुन्नत के अहकाम व अवामीर से सरफे नज़र का रास्ता हमवार होता है और इस बात का जवाज़ फराहम होता है कि कुर्आन करीम और हदीस शरीफ के मुख़्तसर एडिशन तैयार करके पेश कर दिया जाए ताकि इनको इस्लामी और ग़ैर इस्लामी मोआशरों के दरमियान पहुँचाना आसान हो और मोकम्मल इस्लाम लोगों के घरों और इनकी ज़िन्दगियों से ग़ायब हो जाए

हालांकि अल्लाह तआला अहले ईमान को हुक्म देते हैं और फरमाते हैं "(ऐ ईमान वालो, इस्लाम में सारे के सारे दाख़िल हो जाओ, और शैतान के क़दमों की पैरवी न करो, क्योंकि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है)" सूरः बक़रहः208।

अब कुछ नदवातुल उलमा के बारे में– नदवतुल उलमा ने अपने क़याम के रोज़े अव्वल ही से निसाबे तअ़लीम में हस्बे ज़रूरत इस्लाह व तर्मीम को अपने मक़ासिद में शामिल रखा, और जिन लोगों ने इस मक़सद से इत्तिफाक़ किया, उन्होंने इसको बनज़रे इस्तेहसान देखा और ज़माने के तक़ाज़ों के पेशेनज़र इस अक़दाम को सराहा और इसकी पुरज़ोर ताईद की और बहुत से मदारिस ने इससे रौशनी हासिल की और अपने निसाब में इस्लाह व तर्मीम के मोतअल्लिक ग़ौर किया, बाअज़ मदारिस ने नदवा के निसाब को हरफ़ ब हरफ़ क़ुबूल करके इसको अपने यहाँ रायज किया, हमें इस बात का इज़हार करने में मसर्रत है कि दारुल उलूम की निसाबी कुतुब की माँग मदारिसे अरबिया में अलहम्दु लिल्लाह इधर बहुत बढ़ गई है और अहले मदारिस और उलमां इसको बड़ी तअदाद में तलब कर रहे हैं।

अगर हक़ाएक़ से चश्मपोशी न की जाए तो इसमें कोई शुब्हा नहीं कि इस वक़्त ज़माना को एक ऐसे निज़ामे तअ़लीम की ज़रूरत है जो हर तरह से जामेअ व मानेअ हो और जिस में फराख़दिली से नई चीज़ों का लिया गया हो और उन क़दीम चीज़ों को निकाला गया हो जिनकी ज़रूरत इस ज़माने में बाक़ी नहीं रही, और अब इनकी जगह दूसरी चीज़ों ने ले ली है, यह इतना ज़रूरी अक़दाम है कि अगर जल्द इस पर अमल दर आमद शुरू नहीं हुआ तो वह दिन दूर न होगा जब तेज़ी के साथ फैलती हुई बेदीनी और इलहाद की राह से आने वाले नि नये फितनों का मुक़ाबला करने और इस्लाम की तरफ़ से मोदाफियत का फर्ज़ अनजाम देने वाले न सिर्फ यह कि कम बल्कि मफक़ूद हो जायेंगे और अगर ऐसा हो गया तो ख़ुदा न ख़ास्ता इस मुल्क में भी इस्लाम और मुसलमानों का वही हश्र हो सकता है जो उनदुलुस की खूंचुकां दास्तां में पोशीदा है।

पूरी दुनियाये इस्लाम और खुसूसन इस मुल्क के मौजूदा हालात ने इस ज़रूरत का एहसास और तेज़ कर दिया है कि मुसलमानों को अपने तशख़्ख़ुस और मिल्ली वजूद और दीनी शआयर के वक़ा के लिए आलिमे दीन की एक ऐसी जमाअत तैयार करनी है जो बयकवक्त फक़ीह व मुजाहिद दोनों हों, वह एक तरफ दिलों को कुर्आन व हदीस के पैग़ाम से गरमा सकते हों, दूसरी तरफ इनको खुद्दारी व शुजाअत का वह दरस भी दे सकते हों, जिससे वह एक ज़िन्दा क़ौम बनकर दुनिया से अपनी बरतरी और बालादस्ती तस्लीम करा सकें और ब वक़्ते ज़रूरत बड़ी से बड़ी ताक़त को अपने सामने सरनिगूं होने पर मजबूर कर सकते हों।

यह काम उसी वक़्त अन्जाम पा सकता है जब हमारे मदारिस और हमारी तर्बियतगाहें अपने यहां तअ़लीम व तर्बियत का आला नमूना पेश करें, वह क़ौम के लिए ऐसे बुलन्द निगाह उलमा और सरफरोश क़ायद मुहय्या कर सके जो वक़्त की ज़रूरत को किसी तरह नज़र अन्दाज़ करके मुल्को मिल्लत को पीछे रहने पर मज़बूर न करें, इनमें वह जौहर और क़ाबलियत मौजूद हो कि वह बड़े से बड़े सैलाब को रोकने की पूरी इस्तेताअ़त रखते हों, वह दुनिया के मुआमलात से पूरी तरह बा ख़बर, बैनुल अक़वामी हालात से

अच्छी तरह वाक़िफ़ होते हुए दीन की बातों और दीनी तक़ाज़ों और इसके शआयर का पूरा–पूरा इल्म रखते हों।

नदवतुल उलेमा ने इसी तक़ाज़े और ज़रूरत के पेशे नज़र हमेशा अपने निसाब में तर्मीम व इस्लाह को रख रखा और ज़माना के रुख़ को देखकर तअ़लीम व तरबियत का निज़ाम इसने मुरत्तब किया, मौजूदह तर्मीम शुदा निसाब भी इसी रूह का हामिल है, इस वक़्त जिन बातों पर सबसे ज़्यादा तवज्जो देने की ज़रूरत है वह खुसूसियत से दो चीज़ें हैं।

1. अरबी ज़बान की तअ़लीम का इन्तेज़ाम दीन के बुनियादी मज़ामीन की ज़ुबान की हैसियत से और इसके लिए इन तमाम पहलुओं की रेआयत जो ज़ुबान को सही तौर से सीखने के लिए ज़रूरी है, अरबी इन्शा परदाज़ी, अरबी ख़िताबत और अरबी में बेतकल्लुफ बोल चाल और माफिउज्जमीर की अदाएगी, यह वह तीन बुनियादी पहलू हैं जिनके लिए नदवा ने शुरु से अपने यहां इन्तज़ाम करने की कोशिश की है, अरबी ज़ुबान की बुस्अ़त और फैलाव की वजह से रोज़ बरोज़ इन पहलुओं के लिए वसाईल व असबाब की फ़राहमी के लिए नदवा ही ने दरअस्ल तन्हा वह काम अन्जाम दिया है जो अब तक किसी दूसरे इदारे ने अन्जाम देने की कोशिश नहीं की, अरबी ज़ुबान को एक ज़िन्दह ज़ुबान की हैसियत से सीखे बग़ैर क़ुर्आन फ़हमी की वह सलाहियत पैदा होना मुश्किल है जो इसके लिए ज़रूरी है, क़ुर्आन की फ़हम पैदा कर लेना एक इतनी बड़ी नेअमत है जिस का अन्दाज़ह किसी ऐसे शख़्स को हरगिज़ नहीं हो सकता जो अरबी से नावाक़िफ़ और क़ुर्आन के असरार व रमूज़ और इसके नुक़ात के बिलावास्ता समझने से महरूम हों।

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी रह0 ने तलबा के एक इफ्तताही जलसा में तक़रीर करते हुए फ़रमाया था कि "फ़हमें क़ुर्आन इतनी बड़ी नेअमत है कि अगर इस पर कोई शख़्स ख़ुशी से दीवाना हो जाये और गरेबां चाक करके मजनूनाना कैफियत इख़्तियार कर ले तो कोई तअज्जुबख़ेज़ बात नहीं"।

हज़रत मौलाना रह0 ने तलबा को ख़िताब करते हुए यह भी फ़रमाया था कि अगर इस दारुल उलूम में हमको कुछ न मिले और सिर्फ इतना मिल जये कि हम ख़ुदा का कलाम समझने और इसके मुख़ातिब होने के अहल हो जायें तो दुनियाँ की सारी लज़्ज़त व आसाइश इस एक नेअमत पर क़ुर्बान हो सकती हैं

यही वह जज़्बा है जिसके तहत नदवा ने अरबी ज़ुबान व अदब की तअ़लीम के लिए बेहतर से बेहतर इन्तज़ाम किया और इसको दीन का एक अहम फ़रीज़ह समझ कर इसके लिए वसाईल फ़राहम करने में कोई दरेग़ नंही किया, इसका यह अमल क़ाबिले तक़लीद है।

2. दूसरा नुमाया पहलु जो मौजूदा नेसाब की नुमायां खुसूसियत होनी चाहिए वह है अंग्रेज़ी ज़ुबान और दीगर असरी उलूम की तअ़लीम इस मिक़दार में कि तालिब इल्म इनके मुज़िर असरात से महफ़ूज़ रहते हुए इनके ज़रिये दीन की ख़िदमात अन्जाम दे सकें, असरी ज़ुबानों में दीन के मूताल्लिक़ जो कुछ लिखा गया है और इस्लाम पर जो ऐतराज़ात किया गया है इनको बख़ूबी समझ कर वह इसके मुतल्लिक़ अपने ज़ेहन को दीन की तरफ से मोदाफअत और तब्लीग़ के लिए तैयार कर सकें।

अगर गौर किया जाये तो अंग्रेज़ी ज़ुबान व अदब और दूसरे जदीद इल्म व फ़नून की तअ़लीम

मौजूदा दौर में दीन की ख़िदमत करने और सहीह मअ़नों में इस्लाम का पैग़ाम दूसरी क़ौमों तक पहुंचाने के लिए बेहद ज़रूरी है, सूरतेहाल यह है कि हमारे मदारिस से फारिग़ होने वाले तलबा दीन के इल्म से वाकिफ होते हुए भी अपनी बात दूसरों तक पहुंचाने की सलाहियत नहीं रखते, ज़माना जिस नये उसलूब और तरज़ का आदी हो चुका है ज़रूरत हे कि इसी तरज़ो उसलूब के साथ इसके सामने अपना पैग़ाम पेश किया जाय।

मौलाना मुहम्मद अली मुंगेरी रह0 बानी नदवातुल उलमा को इस ज़रूरत का आज से बहुत पहले एहसास हो गया था और इन्होंने अपनी रौशन ज़मीरी से यह बात पहले ही समझ ली थी कि इस्लाम की ख़िदमत कमां हक्क़हू अनजाम देने के लिए बा क़दरे ज़रूरत अंग्रेज़ी ज़ुबान और जदीद उलूम का सीखना बहुत ज़रूरी है, इन्होंने बहुत सफाई के साथ उलेमां को अंग्रेज़ी में उबूर हासिल करने की दअ़वत दी, और तारीख़ व जुग़राफिया और दूसरे ज़रूरी उलूम की अहमियत बताई, वह अपने एक मकतूब में लिखते हैं!

इस ज़माना में दीनी व दुनियावी जरूरतें ऐसी दरपेश हैं कि अग्रेंज़ी ज़ुबान का सीखना ज़रूरी है, अगर चन्द हमारे उलेमा इस क़दर अंग्रेज़ी से वाक़िफ हों कि युरोप में जाकर इस्लाम के फ़जाएल उनकी ज़ुबान में बयान करें तो बहुत कुछ इस्लाम की इशाअत हो, इसी तरह अगर अंग्रेज़ी में रसायल लिख कर मुश्तहिर कराये जायें तो भी बहुत नफाअ हो, ग़र्ज इस वक़्त दुनिया में बहुत बड़ा फिरक़ा जो अपनी सलतनत के ऐतबार से अकसर रूए ज़मीन पर हावी है इसकी ज़ुबान अंग्रेज़ी है, लेहाज़ा तब्लीग़ इस्लाम के लिए ज़रूरी है कि अंग्रेज़ी ज़ुबान सीखी जाए, क्योंकि अब इनको ग़लबह है, और मुसलमान मग़लूब हैं और ग़ालिब मग़लूब की ज़ुबान सीखने पर मज़बूर नहीं हो सकता, लिहाज़ा अगर मग़लूब को इनसे ज़रूरत पेश आये तो फिर ज़रूर इसे ग़ालिब की ज़ुबान सीखनी होगी, यह तो दीनी ज़रूरत थी और दुनियावी ज़रूरतें तो हर किसी पर ज़ाहिर हैं, फिर कैसे हो सकता है कि सब तारीकुद्दुनिया हो जायें, किसी क़िस्म का बरताव अहले दुनिया से न रखें।

यह एक सदी पेशतर की बात है, आज यह ज़रूरत किस क़दर बढ़ चुकी है कि इस का अन्दाज़ा करना किसी के लिए भी दुशवार नहीं है, इस लिए नदवतुल उलमा के नुक़ताए नज़र के मुताबिक़ मदारिसे इस्लामिया केलिए जदीद नेसाबे तअ़लीम तैयार करने की ज़रूरत अब बहुत ज़्यादा बढ़ चुकी है, इस हक़ीक़त से चशम पोशी करने का वबांल हमारी नसलों पर किस भयानक शक़्ल में आ सकता है इस तलख़ सवाल का सही जवाब आने वाला मोर्रिख़ ही दे सकता है।

❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें.....

अल्लाह तआला अपना हाथ रात को फैलाता है ताकि दिन का गुनहगार तौबा करले और अपना हाथ दिन को फैलाता है ताकि रात का गुनहगार तौबा कर ले, यहाँ तक की सूरज डूबने की जगह निकले। (मुस्लिम)

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया कि जो उससे पहले तौबा करता है कि सूरज पश्चिम से निकले, अल्लाह उसकी तौबा कुबूल करेगा। (मुस्लिम)

अन्तिम समय तक तौबा मुमकिन-

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 से रिवायत है कि, वह हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से रिवायत करते हैं कि अल्लाह मोमिन बन्दे की तौबा उस वक्त तक कुबूल करता है जब तक खर्खराहट शुरू न हो। (तिर्मिज़ी)

❑❑

आदर्श शासक

—नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

हज़रत उमर फारूक़ रज़ि0 जो इस्लामी साम्राज्य के महान शासक थे, प्रशासनिक कार्यों से छुट्टी पाकर गश्त पर निकले। इस प्रकार वह लोगों से मिलते–जुलते और उनके दुख–दर्द सुनते तथा उनकी परेशानी दूर करते। किसी अधिकारी की शिकायत सुनने में आती तो उसकी जांच–पड़ताल कर उनकी शिकायत दूर करते। घूमने–फिरने में उन्हें अपनी अच्छाई–बुराई मालूम हो जाती। एक गश्त के मौके पर उन्हें एक बूढ़ी माई मिलीं। पूछा, सब कुशल मंगल? उन्होंने कहा, मैं तो ठीक हूँ, अपनी मुसीबत स्वयं भुगत रही हूँ, लेकिन ये बताओ, हमारे शासक का क्या हाल है, आजकल वह कहाँ हैं? हज़रत उमर रज़ि0 ने कहा, वह अभी–अभी शाम (सीरिया) का दौरा कर लौटे हैं और आजकल मदीने में ही हैं। बूढ़ी अम्मा ने कभी हज़रत उमर रज़ि0 को देखा न था, उन्होंने जब से सुना कि हज़रत उमर मदीने में ही हैं तो बोली बेटा! अल्लाह उनसे समझे!

अमीरुलमुमेनीन हज़रत उमर रज़ि0 ने चौंक कर पूछा, क्यों क्या बात है अम्मा? बूढ़ी अम्मा ने कहा, वह शासक तो बन बैठे हैं, मुसलमानों के वज़ीफे भी जारी कर रखे हैं, लेकिन मुझ बुढ़िया को नहीं पूछा और आज तक मुझ ग़रीब को वज़ीफा नहीं दिया।

हज़रत उमर रज़ि0 ने कहा, अरे अम्मा! उन्हें तुम्हारा हाल मालूम न हुआ होगा। बूढ़ी अम्मा ने कहा, बहुत खूब! मुसलमानों का तो वह शासक बना फिरता है, और उसे ये भी नहीं मालूम की उसके देश में किसका क्या हाल है?

हज़रत उमर रज़ि0 ने जब ये बात सुनी तो अल्लाह के डर से लरज़ गए, और उनकी आखें डबडबा गईं। फिर अपने मन में कहा, ऐ उमर! तुझ पर हज़ार बार अफ़सोस! तेरी प्रजा तुझसे किस तरह झगड़ती है, हर व्यक्ति तुझसे अधिक विद्वान है। फिर उस बूढ़ी अम्मा से बोले, यदि तू इस तकलीफ की शिकायत अल्लाह से न करे और दादख़्वाही को मेरे हाथ बेच दे तो मैं उसका उचित मुआवज़ा दूंगा और उमर को इस पर राज़ी कर लूंगा कि तेरा वज़ीफा जारी कर दें।

बूढ़ी अम्मा ने कहा, अरे बेटा! क्यों मुझ ग़रीब से मज़ाक कर रहा है? लेकिन हज़रत उमर रज़ि0 ने बड़ी मान–मनौव्वल की और अन्ततः बूढ़ी अम्मा मान गईं। वह बीस दिरहम उसे दे कर लौटने ही वाले थे कि इतने में हज़रत अली रज़ि0, और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि0 वहाँ आ गए और कहा अस्सलामु अलैकुम अमीरुलमुमेनीन! बूढ़ी अम्मा ने जो "अमीरुलमुमेनीन" के शब्द सुने तो चौंक पड़ी और बोली, अरे आप ही अमीरुरूमुमेनीन हैं! मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई, मुझे क्षमा करना। हज़रत उमर रज़ि0 ने कहा, नहीं अम्मा! आपसे कोई गलती नहीं हुई, आपने जो कुछ कहा एकदम सच कहा, मेरा कर्तव्य मुझे याद दिला दिया और मेरी गलती मेरे मुँह पर बता दी। ये कहकर हज़रत उमर रज़ि0 ने हज़रत अली रज़ि0 और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 को इस पर गवाह बनाया कि अब ये बूढ़ी अम्मा अल्लाह से मेरी शिकायत नहीं करेंगी।

अल्लाहु अक़बर! अल्लाह का ये डर और इन्साफ का ये आलम प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की शिक्षा–दीक्षा का ही परिणाम था।

शेष पृष्ठ .....23 पर

आकस्मिक घटना अथवा नियोजित योजना इत्तिफाक़ी हादिसा या मुनज़्ज़म मन्सूबा

—इदारा

एक साहब ने कहा कि इत्तिफाक़ से मैं उधर से निकल पड़ा तो देखा कि एक बच्चा पानी में डुबकियाँ ले रहा है, मैंने दौड़ कर उसे बचाया, इत्तिफाक़ से मुझे तैरना आता था, मैं जल्दी से पानी में उतरा और बच्चे को हाथ पकड़ कर अपनी तरफ खींचा, वह मुझसे लिपट जाना चाहा, मैंने होशियारी से उसको दूर रखते हुए कनारे खींच लाया। इत्तिफाक़ की बात मैं जल्द पहुँच गया था, बच्चे ने बराये नाम पानी पिया था, इसलिए उसको उल्टा लटकाने की ज़रूरत न पड़ी।

इस घटना में बच्चे का पानी में डुबकी लेना अल्लाह की मसलहत से था, आप का वहाँ पहँचना और जल्द पहुँचना इत्तिफाक़ से नहीं अल्लाह की तौफीक़ से था, आप का तैराक़ी जानना इत्तिफाक़ से नहीं अल्लाह की तौफीक़ से था।

1952 ई0 की बात है, गाँव में एक कच्ची मस्जिद थी, गाँव में मैं पंज वक्ता नमाज़ का तन्हा नमाज़ी था, अलबत्ता गांव के आधे लोग जुमे को नमाज़ पढ़ लेते थे। मैं इशा की नमाज़ को जाता, चिराग़ जलाता, अज़ान कहता, नमाज़ पढ़ कर और चिराग़ बुझा कर चला आता। इशा की नमाज़ के लिए जाते वक्त कोई रौशनी हाथ में न लेता। एक रात वालिदा ने कहा, अंधेरी रात में मस्जिद जाते हो हाथ में लालटेन ले लिया करो। मैंने कहा मिट्टी के तेल की बू मस्जिद में नहीं ले जाना चाहता, वालिदा ने कहा मजबूरी में जाइज़ है, चुनांचि लालटेन लेकर मस्जिद का जीना चढ़ना चाहा तो देखा कि ज़ीने पर एक काला साँप बैठा है। आवाज़ दी चचा जाद भाई इफ्तिख़ार हुसैन डण्डा लेकर आ गये और साँप को मारा। यह सब इत्तिफाक़ से न हुआ, साँप की मौत थी और मुझ को साँप से बचा कर मेरे अन्दर शुक्र का जज्बा उभारना मक्सूद था, इसलिए अल्लाह के नज्म और अल्लाह की तौफीक़ से यह सब हुआ अल हम्दुलिल्लाह।

कई साल मैंने गल्ले का कारोबार किया है, सन् 1950 ई0 के आस–पास मेरे इलाके में सफेद अरहर की क़ाश्त का बड़ा रवाज था, मई या जून का महीना था, गाँव के लोगों के घरों से अरहर तौला कर जमा करता, फिर मण्डी ले जाकर बेचता, एक दिन अरहर तौलाते रात हो गई, वालिद साहब तौलाते और मैं बोरे में लेकर पीठ पर लादता तथा एक कमरे में ढेर करता। कच्चा कमरा था और अँधेरे में अन्दाज़े से कमरे में ढेर करता जाता, तौलाई की जगह दो लालटेनें जल रही थीं, एक बार लोगों ने कहा अँधेरे में जाते हो पीठ पर बोरा रखो, एक हाथ में लालटेन पकड़ लो। मैंने बात मान ली, लालटेन के साथ जो कमरे में दाखिल हुआ तो देखा कि अरहर के ढेर पर काला साँप बैठा है, फौरन बोरा अलग रख कर डण्डा संभाला और साँप को मारा, यह सब भी इत्तिफाक़ से न था, स्वतः घटना न थी, अल्लाह का मुनज्जम मन्सूबा, व्यवस्थित योजना थी।

एक शीशम का पेड़ काटा जा रहा था, पेड़ काटने वालों को अन्दाज़ा हो जाता है कि पेड़ किस जानिब गिरेगा, जब पेड़ गिरने के करीब हुआ तो एक आदमी की ड्यूटी लगाई गई कि जिस तरफ

शेष पृष्ठ .....30 पर

ज्ञान यदि धन के अधीन है तो अज्ञानता है

—मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी अनु0—नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

इस्लाम एक पूर्ण जीवन व्यवस्था

इस्लाम की एक व्यवस्था है, उदाहरणतः लोग वुज़ू करते हैं, वुज़ू में तीन बार से अधिक हाथ–पैर नहीं धोना चाहिए, इसलिए कि पानी अल्लाह की नेअमत है। पानी को बर्बाद न करें। वुज़ू उतना ही करें जितना की ज़रूरत है। वहाँ, अल्लाह के यहाँ पूछ होगी कि पानी क्यों ज़्यादा खर्च किया? नल को यूं ही खुला छोड़ कर वुज़ू न करें और यदि उचित हो तो लोटे से वुज़ू करें। उसमें एक चीज़ याद रखें कि पानी ज़िन्दा चीज़ है, अब तो साइंस ने भी बता दिया कि जल ही जीवन है, और हम भी ज़िन्दा पानी से हैं, तो ज़िन्दा चीज़ का उपयोग आवश्यकतानुसार होता है कि आप जितना धोंएगे उतना ही पानी को गन्दा करेंगे और पानी आवश्यकतानुसार तो गन्दा कर सकते हैं लेकिन अब यदि आप अधिक खर्च करेंगे तो उसको आप गन्दगी में भी ज़्यादा शामिल करेंगे। तो जिस कदर पानी की ज़रूरत है उतना ही माफ है, लेकिन उससे अधिक बहाया जाएगा तो अल्लाह के यहाँ शिकायत दर्ज हो जाएगी। इसलिए हर चीज़ के इस्तेमाल में उसका ध्यान रखना चाहिए।

मुसलमान एक पूरी व्यवस्था (निज़ाम) लेकर चलता है। लेकिन आजकल माल जो असल हो गया, कुछ देखता ही नहीं। बस पैसा आए और उसके माध्यम से लोगों का उत्पीड़न करें, उनका ग़लत इस्तेमाल करें। अब ये दिमाग़ में बस गया है, इसलिए रूपये का हर जगह ग़लत इस्तेमाल हो रहा है। तो बात ये है कि धन को ज्ञान के अधीन होना चाहिए था, यूँ कहलें कि धार्मिक ज्ञान (इल्मेदीन) को ऊपर होना चाहिए और माल को उसके मातहत। लेकिन धन को पहली श्रेणी प्रदान कर दी गई। जब चपरासी को आप मैनेजर बना दीजिएगा तो क्या परिणाम होगा? आप सब परेशान होंगे और वह भी परेशान होगा। तो आज यही हाल है कि माल भी परेशान है और सब हँस रहे हैं। इसलिए की आपने उसे मैनेजर की कुर्सी पर बैठा दिया। अब उसका परिणाम जो होना है हो रहा है। होना तो यह चाहिए था कि (1) धार्मिक ज्ञान (इल्मेदीन), (2) सांसारिक ज्ञान (इल्मेदुनिया), (3) धन। आपने कहा नम्बर एक धन। दीन तो है ही नहीं, उसको वहाँ रख आओ कूड़े दान में। और सांसारिक ज्ञान ही असल है। तो ये सब परिणाम है अंग्रेज़ों की कूटनीति का। उन्होंने धार्मिक ज्ञान (इल्मेदीन) को घटिया और मामूली बताने के लिए ये सब किया था। अब तो माशा अल्लाह थोड़ा अन्तर आया है। अकबर इलाहाबादी ने अपने अन्दाज़ में कहा था कि "मस्जिद में फक़त जुम्मन" मस्जिद में कौन आएगा केवल जुम्मन। नाइजेरिया के राष्ट्रपति अहमद बेलू आए हुए थे। उनका स्वागत एक बड़ी मुस्लिम यूनिवर्सिटी में किया गया। वह बड़े दीनदार और अच्छे आदमी थे। उस दौर में दीन (धर्म) से दूरी आ़म बात थी, बल्कि फैशन था। ये तो हमारे दीन का काम करने वालों की मेहनत है जो कुछ आज नज़र आ रहा है। संयोग की बात की राष्ट्रपति महोदय को नमाज़ पढ़ने की ज़रूरत पेश आई। वहीं कैनेडी हॉल में वक्त हो गया नमाज़ का, तो उन्होंने अपने भाषण के बाद

कहा "भाई! मुझे नमाज़ पढ़नी है किब्ला किधर है" अब कोई किब्ला वाला था ही नहीं जो बताता, तो उनके सेक्रेटरी ने एक प्रोफेसर साहब से पूछा कि उपासना दिशा (किब्ला) किधर है? प्रोफेसर साहब चुप! इस पर राष्ट्रपति महोदय समझ गए और कहा कि अरे बेवकूफ! इनसे मत पूछ ये जो झाड़ू देने वाला है उनसे पूछ कि उपासना दिशा किधर है, ये मिस्टर थोड़े ही बता पाएंगे कि किब्ला किधर है, उनको कहाँ फुर्सत? उनको अपनी मिस्टरी और प्रोफेसरी से फुर्सत मिले तब तो बताएं कि उपासना दिशा किधर है, उनका किब्ला तो बदल चुका है, उनका किब्ला तो माल है। जिसका किब्ला ही बदल जाए उसका अन्जाम क्या होगा।

आवश्यकता इस बात की है कि हम लोग अपने किब्ले को दुरुस्त करें। इसलिए मैंने कहा कि मैं उस दृष्टिकोण का व्यक्ति हूँ कि किसी भी ज्ञान को बुरा नहीं कहता। डॉक्टर, इंजीनियर, अधिवक्ता, लेकिन उसमें इस्लामी रूह पैदा करदें। देखिये! जो पुराने डॉक्टर हुआ करते थे, जब रोगी उनके पास आता और वह ग़रीब होता तो पैसे भी जेब से निकाल कर देते थे, खाना भी खिलाते थे, दवा भी देते थे। लेकिन आज ऐसा सिस्टम बना दिया गया है कि बेचारे ग़रीब मरीज़ का दीवाला निकल जाए। वह स्वयं तो मरता ही है उसके घर वाले, तीमारदार भी बीमार हो जाते हैं। और ऐसे डॉक्टर तो नज़र नहीं आते जो अपने बड़ों के रास्ते पर चलने वाले हों, और रोगी के हमदर्द हों। ये सब धन से बढ़ी हुई मुहब्बत का परिणाम है, जिससे बहुत मना किया गया है। हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का कथन है "हर बुराई की जड़ दुनिया की मुहब्बत है"।

ज्ञान यदि धन प्राप्ति का माध्यम है तो अज्ञानता (जिहालत) है और यदि धन ज्ञान प्राप्ति का ज़रिया है तो बरकत है। धन यदि पैर या पाज़ेब है तो विकास की सीढ़ी है। लेकिन यदि धन को ज्ञान (इल्म) के सिंहासन पर बैठा दिया जाए तो या यूँ कहें कि पैर को सर पर रख दिया जाए तो उसका परिणाम क्या होगा? इस समय की दुनिया उल्टी दौड़ में लगी हुई है। जिसके नतीजे में मंज़िले मक़्सूद दूर से दूर होती चली जा रही है। जब तक किब्ला दुरुस्त नहीं किया जाएगा, उस समय तक नमाज़ भी सही नहीं होगी। इसलिए इस समय न दीन (धर्म) ही ठीक है और न दुनिया का सही इस्तेमाल हो रहा है। ❑❑

आदर्श शासक.....

हज़रत उमर रज़ि0 कहा करते थे कि ये हुकूमत बड़ी बुरी बला है। अपनी प्रजा के प्रत्येक व्यक्ति की ज़िम्मेदारी मेरे सर है। यदि फुरात नदी के किनारे किसी की बकरी का बच्चा भी गुम हो जाए तो मैं जवाबदेह हूंगा। अल्लाह कि यहाँ मुझे हिसाब देना होगा।

आज मैं भारत के शासक–प्रशासक का हाल देखता हूँ तो ऐसा लगता है कि उनके अन्दर की मानवता मर चुकी है। उनके अन्दर तो सेवा भाव का नामोनिशान तक नहीं मिलता। यदि आम जनता विधायक–सांसद आदि से अपनी व्यथा सुनाना चाहती है तो आमतौर पर कोरा आश्वासन अथवा दुत्कार का कड़वा घूँट मिलता है। उनके अन्दर की ये भावना समाप्त हो चुकी है कि वह जनता के सेवक हैं। जनता का भी कर्तव्य है कि वह शासक–प्रशासक को बार–बार याद दिलाए कि वह जनता के सेवक हैं न कि मालिक। इसी प्रकार यदि कर्मचारियों और अधिकारियों के मन में सेवा भाव जागृत हो जाए और वह देश की सेवा तन्मयता और तत्परता से करे तो अपने देश में चहुँओर खुशहाली दिखाई दे। और हमारा प्यारा देश एक खूबसूरत चमन में परिवर्तित हो जाएगा। ❑❑

मुस्लिम समाज

–हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी –अनु0 मुहम्मद अदील अख़्तर

रहबर–ए–आलम मुहम्मद सल्ल0 ने उम्मते मुस्लिमा की कयादत की बागडोर ऐसे नाजुक तरीन और खतरनाक दौर में संभाली थी जब कि यह लाज़वाल उम्मत साज व सामान से महरूम नीज़ उसके हुसूल के वसायल से तही दामन थी। लेकिन दूसरी तरफ इस ज़िन्दा जावेद उम्मत को कादिरे मुत्लक ने फितरे इन्सानी की कुव्वत और अमली सलाहियत की वह शाहे कलीद अता की थी जो फौलादी ताक़तों से भी अज़ीम तर ताकतवर थी। इसके बरखिलाफ फारस व रूम और आस पास के दीगर मुमालिक को वह तमाम माद्दी व जाहिरी वसाएल मुहय्या थे जो आज भी कुव्वत व ताक़त का राज़ समझे जाते हैं। लेकिन जब इस्लाम जैसी अजीम कुव्वत का सामना हुआ तो बातिल ताकतों के दिल फरेब किले रेत की दीवार की तरह ज़मीन बोस हो गये और और मुसलमानों ने अपनी बाहरी साज व सामान की कम माएगी, उलूम व फुनून और तहजीब व तमद्दुन की तही दामनी के बावजूद बड़े से बड़े किलों को मिस्मार कर दिया और माद्दा परस्तों की हैय्यत अंगेज़ शान व शौकत का मुकम्मल खात्मा कर दिया। यह एक सबक आमोज अम्र ये है कि रूम व फारस माद्दियत के मुहलिक मर्ज का शिकार और अमल में ऐसे अपाहिज हो गए थे जो उनके लिए हकीक़त में पैगामे मौत था।

यहीं से यह हकीकत रोज़े रौशन की तरह अयाँ है कि उन सहरा नशीनों की कामरानी और रूम व ईरान जैसे मुतमद्दुन मुल्क की शिकस्त, उलूम व फुनून से ना आशना लोगों की फतह और उलूम व फुनून से माला माल माद्दा परस्तों की नाकामी का राज, तहजीब व तमद्दुन की तरक्की और ऐश व इशरत के वसायल की फरावानी में मुज्मर नहीं बल्कि हकीकी कुव्वत अज्म व हिम्मत और अमल पैहम में भी है। जिससे इन्कार करना ज़िन्दगी की कश्ती को तूफानी भंवर में ढकेल देने के मुतरादिफ होगा।

यह एक नाकाबिले तरदीद हक़ीकत है कि आज के पुर फरेब तहजीब की चमक दमक ने सारी दुनिया के बनी नौए इन्सान के चैन व सुकून को दरहम बरहम कर दिया है और हलाकत के ऐसे दहाने पर पहुँचा दिया है जहाँ मौत खड़ी इन्तेजार कर रही है। आज की यह नामोनेहाद मुतमद्दुन कौमें और मशीनी इन्सान खुद फरेबी में मुब्तला हैं कि यह भयानक तहजीब उसे हलाकत से बचा लेगी, और इन्सानियत की डूबती कश्ती को साहिले नेजात पर पहुँचा देगी। लेकिन काश! यह हक़ीकत होती। यह कोई ख़्याली बात नहीं बल्कि एक ठोस हकीकत है। तारीख़ शाहिद है कि आज से सदियों पहले मुसलमान और अरब की तहजीब व तमुद्दुन के बहारों का शबाब था। मुसलमानों के उलूमों फुनून का दौर दौरा था और सारी दुनिया को मुसलमानों की ताक़त के सामने झुकना पड़ा था। लेकिन चश्मे फलक ने बाद में यह भी देखा है कि उनकी तहजीब व तमद्दुन, उलूमों फुनून और माद्दी ताकतें उन्हें खूंखार तातारियों की वहशियाना हमलों से नही बचा सकीं और देखते ही देखते शहरे बगदाद जो उलूम व फुनून और तहजीब व तमद्दुन का रौशन मीनारा समझा जाता था वीरान व बर्बाद हो गया और उसका पुर बहार चमन इस तरह खिज़ा की नज़र हो गया कि दोबारा उसकी बहार नहीं लौट सकी। ❑❑

देवनागरी लिपि में उर्दू

दुश्मन अगर क़वी तो निगहबाँ क़वी तर अस्त

—मौलाना सैय्यद मुहम्मद वाजे रशीद हसनी नदवी

—अनु० मन्ज़र सुबहानी

दौरे जदीद में मुसलमानों को मुश्किलात और मसायब का जितना सामना करना पड़ रहा है उतना किसी दूसरी क़ौम या मज़हब के मानने वालों को नहीं करना पड़ा।

इस्लाम के नाम लेवाओं को मुख़्तलिफ उनवानात और मुख़्तलिफ बहानों से मसाईब में मुब्लता किया जा रहा है और इनके मसाइल को हल करने के बजाये पेचीदा बनाया जा रहा है। वह जहां अकसरीयत में हैं वहां की हुकूमतों को इनके खिलाफ़ भड़काया जाता है और बुनियाद परस्ती का ख़तरा बढ़ा–चढ़ा कर पेश किया जाता है ताकि वह इस्लाही और तर्बियती कोशिशों को ताक़त इस्तेमाल करके रोकें। जिसकी वजह से न कोई मदरसा महफूज़ है, न मस्जिद, न कारखाना न तिजारत, हर जगह दीने इस्लाम को मिटाने की तदबीरें इख़्तियार की जा रही हैं। अरबाबे सियासत और अहले क़लम जो अपने आप को इन्सानियत का अलमबरदार क़रार देते हैं, इस्लाम और मुसलमानों के खिलफ़ प्रोपगण्डा करने में मसरूफ हैं। इस्लामी शआएर का मज़ाक़ उड़ाते हैं और अवाम व खास को इस्लामी ज़ेहन से खौफ़जदा करते हैं।

इस इस्लाम मुखालिफ कारवाई की वजह से जो बाज़ वक़्त इस्लाम मुखालिफ़ तहरीक का रंग इख़्तियार कर लेती है। मुस्लिम नौजवानों की बड़ी तादाद खुद मुस्लिम मुल्कों में अज़ीयत में मुब्तला हैं और वह अपने ही मुल्क में बेबस है। इलहाद पसंद और मग़रिबजदह अनासिर इस पर हावी हो गये हैं। क़ौमी प्रेस का रवैया मोआनेदाना है। इस्लाम के खिलाफ़ मज़ामीन तस्वीरों और कारटूनों की इशाअत होती है और इसको आज़ादी–ए–राय और आज़ादी–ए–सहाफत का नाम दिया जाता है। लेकिन अगर कोई इस पर इज़हारे नफरत करे और अवाम के जज़्बात की ग़लत तरजुमानी क़रार दे तो इसको कट्टरपन, कदामत पसन्दी और बुनियाद परस्ती कह कर ग़ैर क़ानूनी इक़दाम क़रार दिया जाता है और उसके खिलाफ कारवाई की जाती है।

इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ इस के मोअक्किफ़ की नफ्सियात का अगर जाइज़ा लिया जाये तो मालूम होगा कि इस का सबब एहसासे कमतरी है और इस्लाम की शान व शौकत और इसकी कूव्वत और फैलने की सलाहियत से ख़ौफ है जो मग़रिबी दुनिया पर सदियों से मुस्तैली है। यूरोप अपने एहसासे कमतरी का इस तरह इज़हार करता है कि मुसलमानों की ऐसी तस्वीर पेश की जाये जिससे खुद मुसलमानों में एहसासे कमतरी पैदा हो और दुनिया के ज़ेहन से उनका रोब निकल जाये और उनके मुख़ालिफ उन पर हावी हो जायें। वह इस्लाम को तंगनज़र और मुसलमानों को पसमान्दा हाल बना कर पेश करते हैं और इसकी कोशिश करते हैं कि आलमे इस्लाम में ऐसे हालात पेश आयें जिन से यह तस्वीर सामने आये। वह मुसलमानों को मुख़्तलिफ तरीक़ों से मुश्तइल करना चाहते हैं ताकि वह जज़्बात से मग़लूब होकर कोई ऐसा इक़दाम करें जिससे उनके जज़्बात ज़ाहिर हों। उनको उनके जायज़ हुकूक से महरूम किया जाता है, उनको

तअलीम से दूर रखने की कोशिश की जाती है। ज़राये इब्लाग़ के ज़रिये इनके पसमाँदा हलके के ऐसे मनाज़िर पेश किये जाते हैं जिससे यह तसव्वुर हो कि पूरी मुस्लिम क़ौम इस हाल में है।

अख़बारात में ऐसे मज़ामीन शाया किये जाते हैं जिनसे मुसलमान मुशतईल हों, मुकद्दस शख़्सियात के खिलाफ ग़लत तसव्वुरात फैलाये जाते हैं, इस्लामी मज़ाहिर को ग़लत तरीक़े से पेश किया जाता है, कभी ऐसा कपड़ा निकाला जाता है जिसमें कुर्आने करीम की आयतों का डिज़ाइन बना होता है। कभी ऐसे जूते निकलते हैं जिनमें नामे मुबारक होता है। क्या यह मजनूनाना हरकतें नहीं हैं, क्या यह मुहज्ज़ब तरीक़े हैं?

एहसासे कमतरी या एहसासे नाकामी ऐसा मर्ज़ है कि जो इस मर्ज़ का शिकार हो जाता है इसको किसी करवट सुकून नहीं मिलता। किसी लम्हे उसको क़रार नहीं आता और हर बक़्त वह अपने आपको खतरात के मुँह में तसव्वुर करता है। यही हाल इस वक़्त दुनियाये मग़रिब का है, वह दुनिया पर ग़ालिब रहने के बावजूद ख़ौफज़दह हैं, उसे हर जगह इस्लाम का बारौब चेहरा नज़र आता है। वह मस्जिद के मिनारों से खौफज़दह है, वह नमाज़ के मन्ज़र से डरता है, उसे मदरसों से डर लगता है, उसे नेक़ाब में इन्क़लाब के आसार नज़र आते हैं और इसके अअ़साब जवाब देने लगते हैं और मग़रिब तहज़ीब के क़िले लरज़ते नज़र आते हैं।

यह हक़ीक़त है कि एहसासे कमतरी की छूत से किसी को नजात नहीं, अफराद हों या जमाअतें, क़बायल हों या ख़ानदान, दानाई व फ़रज़ानगी के ठेकेदार हों या मेहनत व मशक़्क़त के चक्कियों में पिसने वाले मज़दूर पेशा लोग, किसी को इसके ज़ालिम हाथों से छुटकारा नहीं, चुनांचा रोज़ मर्रा का मुशाहिदा है कि जो इस लाअनत में गिरफ़्तार होता है उसको अपने हरीफ के नक़ायस और उसकी बुराईयों की तलाश शुरु हो जाती है, वह हाथ धो कर उसके पीछे पड़ जाता है, हर वक़्त वह इस फिक्र के ईंधन में जलता रहता है कि वह कैसे इसको शिकस्त दे और कैसे वह नाकामियों का कलादह उसकी गरदन में डाले। वह अपनी इस नापाक मुहिम को अन्जाम देने के लिए जायज़ और नाजायज़ तरीक़े इख़्तियार करता है और इसमें अपने ख़्वाब की तअबीर समझता है। अगर ज़माना ने मसाअदत की और क़िस्मत ने यावरी की और इसको मौक़ा हाथ आ गया तो वह चूकता नहीं। बल्कि इस सूरत में इसका मौक़िफ़ निहायत जारहाना और वहशियाना होता है।

यूरोप को अपनी तवील तारीख़ में मुसलमानों से दीनी, सियासी और इक़्तिसादी मैदान में जो तल्ख़ तजुरबात हुए हैं, उस की वजह से जोशे इन्तिक़ाम में सारे अक़दार को पामाल किये दे रहा है और जोशे इन्तिक़ाम में सारी दुनिया के मुसलमानों को नेस्त व नाबूद करने और ख़ाक के ढ़ेर में तब्दील करने के लिए कोशां है, और इस सिलसिले में भी इसकी मुहिम तेज़ है ताकी इस्लाम का नेज़ामे हयात दोबारा दुनिया पर तसल्लुत न जमां सके और यूरोप की मुलहिदाना तहज़ीब जो सिसकियां ले रही है दम न तोड़ दे।

मसीही ताक़त और यहूदी दिमाग़ ने इल्म व फिक्र के रास्ते से इस्लाम पर हमला किया, इससे इसका मक़सद सिर्फ और सिर्फ यह था कि इस्लाम से मुसलमानों का रिश्ता कमज़ोर पड़ जाये। बल्कि यह कहिये मुन्कते हो जाये, इसलिए उसकी कोशिश कि मुस्लिम बच्चों की ऐसी नशो नुमां

हो कि वह मग़रिबी अफकार के हामिल और इलहाद व लादीनियत के सांचे में ढल जायें। इस्लाम से बेज़ार और बरगुशता हों। यूरोप की साम्राजी हुकूमतों ने ताक़त के ज़ोर पर अपने अहदे हुकूमत में इस नापाक स्कीम को अमली जामां पहनाने की कोशिश की, मुश्तशिरकीन और ईसाई मुबल्लिग़ों ने इस काम को आगे बढ़ाने और इस मुहिम को तेज़ रखने में अहम रोल अदा किया इन साम्राजी हुकूमतों का जोशे इन्तिक़ाम इस पर ठण्डा न हुआ बल्कि इन्होंने क़ौमी, वतनी और लेसानी असाबियत का सुर फूँक कर मुसलमानों की जमीयत और इनके शीराजह को मुन्तशिर करने की भी कोशिश की किस हद तक इनको अपने इस मक़सद में कामियाबी हासिल हुई और लेसानी क़ौमी असाबियत की आग ने मुसलमानों के इत्तिहाद के शिराज़ह को खाकस्तर कर दिया। एक तरफ मग़रिबी दुनियां की तरफ़ से साजिशों का यह जाल बिछाया जा रहा था। दूसरी तरफ खुदा की कुदरते क़ाहिरह ने यह फैसला किया कि वह अपनी इन रेशा दवानियों के फन्दे में गिरिफ्तार हों चुनांचे इसने इस्लाम की हिफ़ाजत व बक़ा के लिए ऐसे मरदान कार को मैदान में उतारा जिन्होंने अपनी फहमों फरासत और ईमान की रौशन क़िन्दील से इस्लाम की हिफाज़त और इस उम्मत की निगहबानी की और मग़रिबी तहज़ीब की ख़ामियों को दुनिया के सामने उजागर किया इन्होंने खुल कर उस पर तनक़ीद की और उसकी कमज़ोरियों और साम्राज की इन्सानियत सोज़ हरकतों को अयां किया। दुनियाये यूरोप को अब इस का एहसास हो चला है कि जिस तरह वह आज से बहुत पहले अस्करी सलीबी जंगों में नाकाम हुआ था। आज फिकरी सलीबी जंगों में नाकामी के दहाने पर खड़ा है और वह इस्लाम जिसको इसने अपने अक़दार से महरूम करने की कोशिश की बहुत तेज़ी के साथ लोगों के कुलूब इसके नशेमन बनते जा रहे हैं। और इस्लाम की महबूबियत और मक़बूलियत का ऐसा रुझान आम पाया जा रहा है कि जिन क़ौमों को इस्लाम के शाहराह से हटा कर कुफ्र व इल्हाद की तंग व तारीक गलियों में डाला गया वह नये अज़ायम, नये हौसिलों और उमंगों के साथ फिर इस्लाम की शाहराह की तरफ अपना रुख़ मोड़ रही हैं इन हालात ने मग़रिबी मुमालिक को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि कोई नया महाज़ खोलें।

इस्लामी मुमालिक में जो ईसाई मिश्नरियां काम कर रही हैं इनकी रिपोर्टों से यह साबित होता है कि इस्लामी बेदारी की लहर बहुत तेज़ी से फैल रही है, यहाँ तक की वह मुमालिक जिन को पसमांदा कहा जाता है वहां के लोग भी मिश्नरियों के बेदरेग़ वसायल इस्तेमाल करने के बावजूद ईसाइयत के मुक़ाबले में इस्लाम की तरफ ज़्यादा मायल हो रहे हैं खुद दयारे युरोप में भी इस्लाम के नये–नये शगूफे खिल रहे हैं। असहाबे फिक्र और अरबाबे सियासत इस्लाम का मोतअला करके इस्लाम की तरफ मायल हो रहे हैं और यह बात इस की अक़ल की गिरफ्त में नहीं आ रही है कि हर जगह मुसलमान मज़लूम व मक़हूर हैं। लेकिन इनके जोशे दीनी का हाल यह है कि वह ईमान की राहों पर मर मिटने को मताये हयात समझते हैं। मग़रिब के लोग इस मोअम्मा को हल करने की कोशिश भी करते हैं जो एक मरदे मोमीन की निगाह में कोई मोअम्मा नहीं क्योंकि इसको इस बात पर कामिल यकीन हासिल है कि यह खुद का पसनदीदा दीन और मज़हबे मुख़्तार है और वह अपने दीन को पूरी दुनिया के अन्दर ग़ालिब करके रहेगा।

मग़रिब ने इस्लाम को दबाने की हर कोशिश की लेकिन इस्लाम का सदाबहार दरख़्त आज भी वही बर्ग व बार लाने की सलाहियत रखता है। हज़ार इसको क्यूद के आहीनी शिंकंजों में जकड़ा जाये लेकिन इसकी जो उभरने की फितरत है इसका ज़ुहूर हो कर रहेगा।

"इस्लाम की फितरत में कुदरत ने लचक दी है, उतना ही यह उभरेगा जितना कि दबाओगे" और इसलिए भी कि मग़रिब का रवय्या हमेशा जाबिराना और ज़ालिमाना रहा है और यह कुल्लिया है कि जुल्म की नाव सदा नहीं चलती। और न ही इसका दरख़्त पनपता है बल्कि जुल्म का अंजाम बुरा और इसका मुंह काला होता है। और इसके नतीजा में रद्दे अमल की कैफियत भी पैदा होती है जिससे बड़े–बड़े इन्क़लाब रूनुमां हुए हैं। दूर जाने की ज़रूरत नहीं है निपोलियन ने जब मिस्र पर हमला किया तो सारे अरब जाग गये और डट कर इसका मुक़ाबला किया युरोप ने जिन इस्लामी दुनिया पर सलीबी जंग छेड़ी तो मुस्लिम दुनिया में ऐसे हौसलामंद पैदा हुए जिन्होंने यूरोप का मुंह मोड़ दिया मग़रिबी साम्राज ने जब इस्लामी दुनिया पर क़ब्ज़ा किया तो ऐसे जांबाज़ पैदा हुए जिन्होंने साम्राजियों को निकलने पर मजबूर कर दिया इसलिए वह दिन दूर नहीं कि जब इस नई सलीबी जंग से सारी दुनिया के मुसलमान बेदार हो जायें। मग़रिब को अपनी फरज़ानगी पर नाज़ है लेकिन इसकी सोच की असास निहायत ही बोदी और कमज़ोर है उसका तसव्वर यह करना कि मुसलमानों की राहों में काँटे बिछा कर इनको आगे बढ़ने से रोका जा सकता है। इस्लाम से इनके तअल्लुक़ को ख़त्म किया जा सकता है। लेकिन शायद इसको यह मालूम नहीं कि इस जदीद जंग की वजह से सारी दुनिया के मुसलमान जाग गये हैं इनको अपने और पराये का इदराक हो गया है। बातिल और तागूती ताक़तों से नबर्रद आज़माई और इससे आँखें मिलाने के लिए तैयार हो रहे हैं इनके अन्दर यह शऊर जाग गया हे कि मग़रिब इन पर अपना तसल्लुत जमां कर इनको कमज़ोर करना चाहता है इसलिए मग़रिब के ज़ालिमाना नेज़ाम और आहिनी शिकंजों से रेहाई की कोशिशें जारी हैं यह बेदारी की लहर सारी दुनिया के मुसलानों में जारी व सारी है, उम्मदी है कि इसके नतीजे में इस्लाम की बाज़गश्त का वह दरवाज़ा खुलेगा जो बड़ी–बड़ी लहरों को और दावतों की कोशिशों से न खुल सका था इसलिए कि मौजूदा मसायल एक मुसलमान को यह सोचने पर मजबूर कर रहे हैं कि आखिर इस को जुल्मों सितम की भट्टी में क्यों तपाया जा रहा है क्या सिर्फ इसलिए कि वह मुसलमान हैं?

मसीही दुनिया में अगर कहीं तेज हवा चल जाती हे तेा युरोप के इन्सानी इदारे भागदौड़ करने लगते हैं लेकिन इस्लामी दुनिया में लाखों की तअदाद में लोग भूख प्यास जुल्म व तशद्दुद का शिकार हैं तो तो आलमी ताक़तवरों में हरकत नही पैदा होती इसलिए कि यहां के रहने वालों का मज़हब उनके मज़हब से मुख़्तलिफ है चाहे व यूरोपियन नस्ल के क्यों न हों। यूरोप की यह जानिबदारी और इस्लाम के साथ इसके जारेहाना मौक्किफ की तस्वीर इसके अकसर व बेशतर उमूर में झलकती नज़र आती हैं मग़रिबी मुल्कों के इस ज़ालिमाना मौक्कि़फ से मोतास्सिर हो कर अकवामें मुत्तहिदा ने भी इस्लामी मुमालिक के साथ गैर जानिबदाराना बरताव शुरू कर दिया है। चुनांचे इसकी यह हालत हो गई हैं कि बैनुलअक़्वामी मसायल के हल के लिए इसके पास कोई मेआर नहीं कोई नेज़ाम

शेष पृष्ठ .....30 पर

सच्चा शिक्षक समाज का अच्छा मार्गदर्शक

मनुष्य को पृथ्वी पर भेजने के बाद ईश्वर ने उसकी शिक्षा–दीक्षा और मार्गदर्शन के लिए अपने रसूलों को अपने ज्ञान के साथ भेजा और समस्त मनुष्य जाति की रहनुमाई की। रसूलों ने मानवता का शिक्षक, गुरू और मार्गदर्शक बन कर उसे जीने की राह दिखायी। महापुरूषों ने नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा के साथ–साथ मानवता को तत्कालीन आवश्यकताओं की दृष्टि में रख कर हर तरह के ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा भी दी। कहीं पैग़म्बर नूह अलै0 ने मनुष्य को नाव बनाना बताया। कहीं यूसुफ अलै0 ने सपनों का रहस्य जानने, राज्य का प्रशासन चलाने और दैवीय आपदाओं के प्रभाव से बचने की शिक्षा दी। किसी ने लोहे का महत्व समझाया तो किसी ने तिब्बी इलाज के तरीक़े बताए। ईश्वर द्वारा ज़मीन पर भेजे गये पैग़म्बर एक उपदेशक के साथ–साथ अक्सर चिकित्सा शास्त्र, साइंस, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, सैन्य कौशल, युद्ध विद्या, शस्त्र विद्या आदि के जानकार और शिक्षक भी होते थे।

ईश्वर के अन्तिम संदेष्टा हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने छठी सदी में आकर ईश्वरीय ज्ञान मानवता को सिखाया। चूँकि उनके समय में लिखने और पढ़ने की कला विकसित हो चुकी थी, इसलिए कुर्आन की शिक्षा, ज्ञान और उपदेशों को लिखने और पढ़ने के माध्यम से सीखने और सिखाने का वातावरण तैयार किया। यद्यपि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 स्वयं पढ़े लिखे नहीं थे किंतु मदीना में मस्जिद के सामने एक चबूतरे पर उनके द्वारा शिक्षण कार्य किया जाता था तथा अपने साथियों को कुर्आन की शिक्षाओं के माध्यम से पाया हुआ, आध्यात्मिक, पारलौकिक, भौतिक और सांसारिक ज्ञान सिखाते थे। फिर भी उन्होंने अपने अनुयायियों को पढ़ने व लिखने की सुविधा और कला का भरपूर फ़ायदा उठाते हुए ईश्वरीय ज्ञान को सीखने, सिखाने और दुनिया में फैलाने का आह्वान किया। यह चबूतरा एक इस्लामिक यूनीवर्सिटी से कम अहमियत नहीं रखता है। अगर हम हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के जीवन का अध्ययन करें तो पता चलता हे कि वे स्वयं भी शिक्षक थे और उनके अनुयायियों में भी शिक्षकों के गुण पाये जाते थे और यही कारण है कि व मानवता को मार्गदर्शन देने में कामयाब रहे।

हिन्दू धर्म गुरूओं ने समाज को धर्म ज्ञान और युद्ध कला आदि सिखाने के लिए आश्रम खोले थे, जहां राजा महाराजाओं की संतानें भी शिक्षा ग्रहण करती थीं। वस्तुतः आदिकाल से इसीलिए गुरू को बहुत ही सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। किंतु पुराने समय में एक शिक्षक सिर्फ़ शिक्षक नहीं होता था, बल्कि मानव समाज का मार्गदर्शक, कर्णधार, रहनुमा और रहबर होता था। वास्तव में आज भी एक शिक्षक का महत्व किसी धर्म गुरू से कम नहीं है इसलिए उसके स्वभाव में त्याग और बलिदान की भावनाएं होंना चाहिए। किंतु जब आजकल धर्म गुरू, साधू, सन्यासी, मौलवी, इमाम और पादरी सन्मार्ग और अपने कर्तव्यों से भटके दिखायी दे रहे हैं तो ऐसे वातावरण में किसी स्कूल के टीचर, अध्यापक, शिक्षक, उस्ताद, प्रवक्ता, आचार्य और प्राचार्य में इन गुणों की अपेक्षा

करना अजीब–सा लगता है।

आजकल शिक्षकों के सम्मान और सुविधाओं में कोई कमी नहीं है। भौतिक दुष्टि से शिक्षक सुखी और आर्थिक दृष्टि से संपन्न और सन्तुष्ट हैं। असीमित छुट्टियाँ, बेहतरीन आकर्षक वेतन और भत्ते और सुरक्षा व सम्मान ने शिक्षकों के जीवन को और अधिक सुखमय और भविष्य को सुनहरा बना दिया है। किंतु आमतौर पर इन सारी सुविधाओं के बावजूद आज के शिक्षक अपने कर्तव्यों का सही पालन नहीं कर रहे हैं। इसकी वजह यह है कि आज का शिक्षक सिर्फ़ वेतन भोगी कर्मचारी बन कर रह गया है और अपने गुरु, उस्ताद, रहनुमा और रहबर होने की ज़िम्मेदारी और हैसियत को नहीं समझ रहा है। जबकि वह आज भी नये–नये ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा देने के साथ–साथ समाज का मार्गदर्शक और कर्णधार बनकर, मानवता, नैतिकता और सच्चरित्रता के बीज आरोपित करके, उच्चतम मानव मूल्यों और मानदंडों पर आधारित समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

❖❖❖

जगनायक .....

लोगों से किया तो जो लोग आपके मुख़ालिफ (विरोधी) और दुश्मन थे, वह मज़ाक़ उड़ाने लगे कि ऐसी सवारी कहाँ होती है जिसके ज़रिए कोई आदमी मक्का से बैतुल मुकद्दस थोड़ी देर में पहुंच जाए और सुबह होने से पहले वापस आ जाए यह तो सुबूत है कि यह झूठ बातें कहने वाले हैं, लेकिन मुसलमानों ने सुना तो कहा कि इससे बड़ी बातों को हम मानते हैं इसके मानने में क्या रूकावट है और उनका ईमान बढ़ गया[1]।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 ने कहा कि अगर आप सल्ल0 ने ऐसी बात कही है तो सच कही है, तुम को इस पर तअज्जुब क्यों? खुदा की क़सम! आप मुझे ख़बर देते हैं कि "वही" आपके पास दिन रात के किसी हिस्से में आसमान से ज़मीन तक आ जाती है तो मैं आप सल्ल0 की तसदीक़ करता हूँ यह तो उससे भी मुश्किल है और बईद (दूर) है जिस पर तुम लोग तअज्जुब कर रहे हो।

1. सही बुख़ारी, बाब हदीसुल इसरा,सही मुस्लिम किताबुल ईमान, बाबुल इसरा, अस्सीरतुल नबविया इमाम ज़हबी 1/241–278, सीरत इब्ने कसीर भाग–2 पृष्ठ 96, सीरत इब्ने हिशाम 1/399, दलाइलुल नबूवा बैहिक़ी भाग–2 तबक़ात। ❑❑

दुश्मन अगर कवी .....

और दसतूर नहीं जिसके ज़रिए से वह मुसीबत ज़दंह इन्सानियत के मसाईल को हल कर सके। युरोप और इस्लाम इस वक़्त की हक़ीक़ी लड़ाई की बुनियाद इस्लामी बेदारी की वह लहर है जिसने युरोप की नींद हराम कर दी है और वह कील काँटे से लैस होकर इस सैलाब को रोकने की नाकाम कोशिश कर रहा है लेकिन वह खुद अपनी इन मोआन्दाना तदबीरों से और बे इन्साफियों से और ग़ैर ज़रूरी प्रोपगण्डा से इस्लामी जज़बा को कूव्वत पहुँचा रहा है और आग को भड़का रहा है। ❑❑

आकस्मिक घटना या .....

पेड़ गिरने वाला है उधर से कोई गुज़रने न पाए, लेकिन अल्लाह की मसलहत वह देख न सका और एक जवान देहाती उधर आ गया, पेड़ उसी जानिब गिरने लगा, काटने वाले चिल्लाए भाग–भाग, वह देहाती उसी पेड़ को घूरने लगा। यहाँ तक कि पेड़ उसके ऊपर आ रहा, काटने वाले मजदूर भाग खडे हुए, पुलिस आई कारर्वाई हुई, यह सब इत्तिफाक़ से न हुआ अल्लाह के फैसले और नज्म से हुआ।

शरीअत का जो हुक्म है वह करो, कोताही न करो और अल्लाह के फैसले पर राज़ी रहो। ❑❑

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ़्ती मुहम्मद जफ़र आलम नदवी

प्रश्नः कुछ लोगों का कहना है कि हज़रत इमाम हुसैन के साथ इमाम न लगाना चाहिए, इस पर कुछ रौशनी डालिए।

उत्तरः शीआ़ हज़रात 12 इमामों का अक़ीदा रखते हैं, इन इमामों के बारे में शीआ हज़रात का जो अक़ीदा है वह अहले सुन्नत का नहीं है इसलिए जिसने कहा होगा कि हज़रत हुसैन रजिअल्लाहु अन्हु के साथ इमाम न लगाया जाये उसने शीआ हज़रात के अक़ीदे से बचाने के लिये कहा होगा। अगर शिआ हज़रात वाला अक़ीदा न हो तो हजरत हुसैन रजिअल्लाहु अन्हु के साथ इमाम लगाने में कोई हरज नहीं, हम अहले सुन्नत बहुतों के साथ इमाम लगाते हैं जैसे इमाम बुखारी, इमाम अबू हनीफा, इमाम मालिक, इमाम शाफई, इमाम अहमद वगैरह और खुद हज़रत हुसैन रजिअल्लाहु अन्हु के लिए खुत्बों में जिस वक्त नबी सल्ल0 पर सलात व सलाम पढ़ते हैं तो कहते हैं "अ़लल इमामैनिल हुमामैनिस्सई दैनी शहीदेन अबी मुहम्मदनिल हसन व अबी अब्दिल्लाहि हुसैन" पस अगर हज़रत हुसैन के साथ सुन्नी अकीदे के तहत इमाम लगाते हैं तो जाइज़ है अलबत्ता जब हम हज़रात खुलफाए राशिदीन के साथ इमाम नहीं लगाते तो अगर बगैर इमाम लगाए हज़रत हुसैन रज़ि0 कहें तो भी कोई हरज नहीं।

प्रश्नः कुछ लोग कहते हैं कि मुहर्रम में शादी न करना चाहिए, इस पर कुछ रौशनी डालिए।

उत्तरः मुहर्रम में कोई शख़्स मआ़जल्लाह इसलिए खुशी मनाए या खुशी का मौका निकाले कि हुसैन ने बगावत की तो उनको सजा मिल गई "जैसा कि मिन्हाजुस्सुनना" ने इब्नि तैमिया ने एक फ़िरके के बारे में लिखा है, ऐसे शख़्स को तो हम मुसलमान ही नहीं समझते लेकिन अगर मुहर्रम के दिनों में अल्लाह तआला कोई खुशी का मौक़ा इनायत फरमा दे जैसे बच्चे की पैदाईश वगैरह तो खुशी मनाने में कोई हरज नहीं, इसलिए कि इस्लाम में ऐसा कोई हुक्म मौजूद नही कि जिस तारीख या दिन को कोई रंज का मौका हो जाए उस रोज़ कभी खुशी न मनाई जाए इसलिए मुहर्रम में अगर किसी का निकाह हो और वह और उसके घर वाले खुश हों तो कोई हरज नहीं और मुहर्रम की किसी तारीख में भी निकाह मना नहीं, निकाह तो एहराम की हालत में भी दुरुस्त है, ज़रूरत पड़ने पर जिस महीने, जिस तारीख, जिस दिन चाहें निकाह करें, निकांह तो एक इबादत है, अलबत्ता निकाह की इबादत के साथ लहव व लइब, नाच बाजा वगैरह जोड़ना मुहर्रम में भी नाजाइज है और गैर मुहर्रम में भी।

प्रश्नः कुछ लोग उठते बैठते या रसूलल्लाह कहते हैं इसका क्या हुक्म है?

उत्तरः बरेलवी उलमा ने फत्वा दे रखा है कि या रसूलल्लाह कहना जाइज़ है। अगरचि हमको उनके फ़तवे पर कलाम है, लेकिन जो लोग या रसूलल्लाह कहते हैं उनको हमदर्दी से समझाना चाहिये कि या रसूलल्लाह कहना बेअदबी है कहा करो या रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैक व सल्लम अगर उनके समझ में आ जाए और इसे अपना लें तो अच्छी बात है वरना उनको उनके हाल पर छोड़ दें,

अल्लाह उनको मुआफ करे, वरना वैसे चाहिये यह कि उठते बैठते अल्लाह का ज़िक्र किया जाए "अल्लज़ीन यजकुरुनल्लाह कियाम व कुअर्दव्व अ़ला जुनूबिहिम" (अक़लमंद लोग खड़े बैठे लेट कर करवट लेते अल्लाह का ज़िक्र करते हैं) कुर्आन मजीद या हदीस शरीफ में गायबाना या रसूलल्लाह कहने का इशारा तक नही मिलता, हम तो इसको निदा के बजाए नुदबा से तावील कर लेते हैं कि इसने मुहब्बत में ऐसा कहा, और कहने वाले को अल्लाह के हवाले कर देते हैं।

प्रश्नः कुछ लोग नमाज़ में पैर बहुत फैलाते हैं, कुछ पैर टेढ़े मेढ़े रखते हैं नमाज़ में पैर किस तरह होना चाहिए ?

उत्तरः नामाज़ में किब्ला रुख होना ज़रूरी है, इस तसव्वुर के साथ खड़े होना चाहिए कि हम अल्लाह तआला के सामने खड़े हैं, जितना अदब मुमकिन हो उसको अमल में लायें, अच्छा यही है कि दोनों पैर सीधे हों, बीच में चार छः अंगुल फासिला हो, लेकिन अगर कोई ज़्यादा पैर फैलाता है या एडियों की तरफ कम और पंजों की तरफ ज़्यादा फासला रखता है या पंजा टेढ़ा कर देता है तो इससे नमाज़ में फर्क नहीं आता, अगर महसूस हो कि खड़े होने में अदब मलहूज नहीं रहता तो हमदर्दी से समझाना चाहिये, महज एतिराज का लहजा इख़्तियार करके अपने से दूर न करना चाहिए, अगर कोई अहले हदीस मसलक पर अमल करते हुए ज़्यादा पैर फैलाता है तो उसे टोकना न चाहिए कि वह अपने नज़दीक दीनी एअ़तिबार से सही कर रहा है।

प्रश्नः नमाज़ में किसी किस्म की आवाज़ निकालने का क्या हुक्म है?

उत्तरः नमाज़ में जो चीज़ें पढ़ी जाती हैं उनके अलावह किसी किस्म की आवाज़ न निकालना चाहिए, अगर किसी के जवाब में कोई आवाज़ निकाली जैसे सलाम का जवाब दिया, या छींक पर किसी की अलहम्दुलिल्लाह के जवाब में यरहमुकल्लाह कहा तो नमाज खराब हो गई उसे फिर से पढ़े, अलबत्ता कुर्आन का कोई लफ्ज़ खुद से निकाला जैसे अल्लाह या सुब्हानल्लाह कहा तो नमाज़ खराब न होगी मगर चाहिए ये कि नमाज़ में, पढ़े जाने वाले कलिमात के अलावा दूसरे कल्मे न निकाले जाएं।

प्रश्नः नमाज़ में ज़ोर से आमीन कहना कैसा है?

उत्तरः नमाज़ में सूर–ए–फातिहा के बाद आमीन कहना नबी सल्ल0 से साबित है, इमाम मालिक इमाम शाफई, इमाम अहमद बिन हम्बल और अहले हदीस हजरात के नजदीक आवाज से आमीन कहना साबित है और इमाम अबू हनीफा के नज़दीक आहिस्ता आमीन कहना साबित है, लेकिन अगर कोई हनफी ज़ोर से आमीन कह दे तो उसकी नमाज़ खराब न होगी।

मेरा अपना ख्याल यह है कि नबी सल्ल0 ने इतनी आवाज़ से आमीन ज़रूर कही कि बगल वाले ने सुनी, तभी तो जाना कि नबी सल्ल0 ने आमीन कही, लिहाजा अच्छा यह है कि बहुत चिल्ला कर आमीन न कहें, मगर इतनी आवाज़ से जरूर कहें कि बगल वाला सुन ले, अगर सारे मुक़तदी इस हल्की आवाज़ से आमीन कहेंगे तो एक संजीदा आवाज़ से मस्जिद गूँज जाएगी, लेकिन अगर खूब चिल्ला कर आमीन कहेंगे तो करख़्त आवाज़ से मस्जिद गूँजेगी। बहर हाल आपस में इत्तिफाक जरूरी है। जोर और आहिस्ता आमीन के झगड़े को हरगिज़ न उठाना चाहिये।

प्रश्नः 10 मुहर्रम को अपने अहल व अयाल पर खाने की वुसअ़त करना कैसा है।

उत्तरः एक ज़ईफ रिवायत से इसकी फजीलत साबित है, पस

अगर रिवायत का लिहाज करते हुए उस रोज़ अच्छे खाने का एहतिमाम हो तो कोई हरज नहीं, मगर किसी गुमराह फिरके की तरह इजहारे खुशी में न हो। दिन में रोज़ा रखा, शाम को अच्छे खाने का नज़्म हो तो अच्छी ही बात है।

प्रश्नः ऐसे रेलवे मुलाजिम जिन को रोजाना 100 या उससे जाइद किलो मीटर तक ट्रेन पर रहना और एक जगह से दूसरी जगह जाना पड़ता है, उसकी नीयत सफर की नहीं बल्कि ड्यूटी अंजाम देने की होती है, उनको पूरी नमाज़ पढ़ना होगी या कस्र की इजाज़त होगी?

उत्तरः रेलवे मुलाजिम को जब 48 मील यानी 78 किलो मीटर या उससे जाइद जाना हो तो वह मुसाफिर रहेगा और उसको कस्र करना पड़ेगा चाहे उसका मकसद ड्यूटी अंजाम देना हो, क्योंकि क़स्र का हुक्म सफर पर है न कि सफर के मक्सद पर, लिहाजा अगर मसाफते सफर पाई जाए तो क़स्र का हुक्म होगा, सफर की मसाफत न पाई जाए तो क़स्र न होगा। (रद्दुल मुख्तार 500/2)।

प्रश्नः एक शख़्स सफर के इरादे से चला अभी वह आबादी के स्टेशन पर था कि ज़ुहर की नमाज का वक्त आ गया अब वह पूरी नमाज़ पढेगा या कस्र करे?

उत्तरः सफर के इरादे से जब शहर से बाहर हो जाए और 78 किलो मीटर या जाइद सफर हो तो कस्र करेगा। शहर के अन्दर स्टेशन पर क़स्र की इजाज़त न होगी। (रद्दुल मुख्तार 542/2)।

प्रश्नः सफर में ट्रेन में भीड़ के सबब खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने की गुंजाइश न हो तो बैठ कर नमाज़ पढ़ने की इजाजत है या नहीं?

उत्तरः अगर ट्रेन में भीड़ के सबब खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने में दुश्वारी हो तो बैठ कर नमाज़ अदा करने की इजाज़त है।
(रद्दुल मुख्तार 565/2)।

प्रश्नः सफर में जो नमाज़ें कज़ा हो जाएं और वह मुकीम होने पर पढ़ी जाएं तो पूरी पढ़ी जाएंगी या क़स्र पढ़ी जाएंगी?

उत्तरः सफर की कजा नमाजें जब अदा की जाएंगी तो चाहे कस्र की हालत में अदा करे या मुकीम होने की हालत में कस्र ही पढ़ी जाएंगी, इसी तरह कियाम की कज़ा नमाजें चाहे सफर में अदा करे या कियाम की हालत में पूरी पढ़ी जाएंगी।

प्रश्नः ताज़िया दारी का क्या हुक्म है?

उत्तरः हज़रत हुसैन रज़ि0 से मुहब्बत ईमान का हिस्सा है। वह आला दर्जे के शहीद हैं, जन्नती जवानों के सरदारों में से हैं, यकीनी तौर पर जन्नती हैं, नबी सल्ल0 के महबूब हैं, तमाम सहाबा को महबूब हैं, उम्मत के सभी नेक लोगों के महबूब हैं लेकिन ताजिया दारी नासमझों की ईजाद है, इसका हज़रत हुसैन से मुहब्बत का दूर का भी तअल्लुक़ नहीं है और तमाम अहले सुन्नत उलमा के नज़दीक ताजिया दारी नाजाइज़ है। सोचना चाहिये अगर ताजिया दारी का इस्लाम में कोई दर्जा होता तो सहाबा किराम नबी सल्ल0 की वफात पर ताजिया बनाते, हज़रत अबू बक्र की रज़ि0 की वफात पर सहाबा ताजिया रखते, हज़रत उमर रज़ि0 की शहादत पर सहाबा ताजिया रखते, हज़रत उस्मान रज़ि0 की मजलूमाना शहादत पर सहाबा ताजिया रखते, हज़रत अली रज़ि0 की शहादत पर हजराते हस्नैन ताजिया रखते, हज़रत हसन की शहादत पर हज़रत हुसैन ताजिया रखते, हज़रत हुसैन की शहादत पर हज़रत जैनुल आबिदीन ताजिया रखते, हज़रत ज़ैनुल आबिदीन के जाँबाज़ बेटे हज़रत ज़ैद की शहादत पर कम से कम उनके घर वाले तो ताजिया रखते, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की शहादत पर मुसलमान ताजिया

शेष पृष्ठ .....35 पर

भ्रष्टाचार को मिटाने में जन लोकपाल बिल कितना कारगर?

—ए0जे0 खान

आज पूरे देश में उथल–पुथल का माहौल है। भ्रष्टाचार को लेकर पूरा देश सांसत में है। मगर देश से इस बीमारी को दूर करने का कोई कारगर नुस्खा नही मिल पा रहा है। भ्रष्टाचार का क्षेत्र दिन ब दिन बढ़ता जा रहा है। आज कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं है, नीचे से ऊपर तक सभी इस बीमारी के शिकार हैं। श्रमिक से लेकर ऊँचे पदों पर बैठे अधिकारी, सांसद, एम0एल0ए0 मंत्रीगण, बड़े–बड़े ठेकेदार, उद्योगपति सभी सही ढंग से अपने–अपने कार्यों को अन्जाम नहीं दे रहे हैं। श्रमिक को लीजिए वह काम में सुस्त और मज़दूरी में चुस्त है। कारीगर काम को टालता है। एक दिन का काम दो दिन में निपटाता है। पढ़ाई का माहौल बिगड़ चुका है। छात्र पढ़ना नहीं चाहते, अध्यापक पढ़ाना नहीं चाहते। पास होने के नये–नये तरीक़े अपनाये जा रहे हैं। खुले आम नकल करना, हाई स्कूल और इन्टर की उत्तर पुस्तिकाओं में सौ और पचास के नोट पिन करके, गुरुओं से उत्तीर्ण करने की प्रार्थना करना आदि हथकन्डों का प्रयोग किया जा रहा है। अध्यापक स्कूल में न पढ़ा कर घरों में कक्षायें लगाते हैं और अभिभावकों से मोटी रकम वसूलते हैं। कोचिंग आम हो गई है, बिना कोचिंग ज्वाइन किये कोई भी छात्र सफल नहीं हो सकता।

डॉक्टर मरीज़ों का सही इलाज नहीं करते, अच्छे डॉक्टरों ने अपनी फीस इतनी बढ़ा रखी है कि गरीब मरीज़ की उन तक रसाई नहीं हो पाती, मेडिकल कालेजों में आप्रेशन के बहाने मरीज़ का गुर्दा तक निकाल लिया जाता है और इससे अच्छी आय प्राप्त की जाती है।

वकीलों का पेशा झूट पर आधारित है। मुकदमे की तारीखें बढ़वाकर मुअक्किलों को परेशान किया जाता है। वेरिफिकेशन के द्वारा ज़िन्दा को मुर्दा और मुर्दे को ज़िन्दा करना एक आम बात है। इन्जीनियर अपने कार्य से अनभिज्ञ है। करोड़ों रूपये से निर्मित पुल कुछ ही दिनों में ढह जाते हैं।

आज मिलावट का धन्धा आम है। दूध, घी, दही, मक्खन कोई भी वस्तु शुद्ध नहीं मिल सकती। खाने पीने की हर चीज़ में जहर मिलाया जा रहा है। मिलावट करने वाले इतने अन्धे हो रहे हैं कि वह यह भी भूल जाते हैं कि इन वस्तुओं का प्रयोग उनके घर के सदस्य भी कर सकते हैं। हद यह है कि इस वक्त दवायें भी डुप्लीकेट बिक रही हैं।

घूस और कमीशन खोरी का धन्धा बहुत पुराना है और अब तो इसी के बल पर बड़े–बड़े घोटाले किये जा रहे हैं। इन घोटालों में बड़े–बड़े अधिकारी, एम0एल0ए0, एम0पी0 और मंत्री तक लिप्त पाये जाते हैं। जनता के हितार्थ केन्द्र सरकार से चला एक रूपया जनता तक पहुंचते–पहुंचते दस पैसे रह जाता है।

आज देश का एक भी व्यक्ति भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं है तो इस बला को दूर करने के लिए कौन आगे आयेगा? मेरी अपनी सोच यह है कि क़ानून या लोकपाल बिल से भ्रष्टाचार नहीं दूर किया जा सकता है, इसके लिए प्रत्येक देशवासी को अपने स्थान पर सोचना होगा, अपने में सुधार लाना होगा, अपने मन को शुद्ध करना होगा अपने चरित्र को उठाना

होगा। देश का प्रत्येक नागरिक सच्चा बने, अच्छा बने, बुरे कामों से दूर रहे, ईमानदार और सदाचारी बने। इस कार्य को करने के लिए एक आदर्शवादी व्यक्तित्व की आवश्यकता है जो पूरे देश का भ्रमण करे, गाँव–गाँव, शहर–शहर घूम कर लोगों को अच्छा बनने का उपदेश दे तो कुछ काम बन सकता है। कानून जबरन किसी को अच्छा नहीं बना सकता जब तक व्यक्ति की अन्तरात्मा न कहे कि मुझे सुधरना है।

मुझे पूरा विश्वास है कि लोग अपने में सुधार ला कर दूसरों को भी सुधार सकते हैं और इस प्रकार देश को भ्रष्टाचार से मुक्ति दिला सकते हैं। इस काम में समय लगेगा, जरूरत है एक नये उमर फारूक़.की जो आगे आकर मोर्चा संभाले। ❑❑

आपके प्रश्नों के उत्तर.....

रखते, अल्लाह तआ़ला सारे सहाबा से राजी हुआ मुसलमानों को चाहिए कि ताजिया दारी से दूर रहें।

प्रश्नः हज़रत हुसैन रज़ि0 की याद और मुहब्बत में क्या करना चाहिए?

उत्तरः आप हज़रत अबूबक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, हज़रत अली रज़ि0 की याद में क्या करते हैं? किसी की याद और मुहब्बत में कोई बिदअत ईजाद करना हरगिज़ दुरुस्त नहीं, हज़रत हुसैन या किसी भी बुज़ुर्ग की याद आए तो अल्लाह तआला से उस पर रहम की दुआ मांगे, उसकी ज़िन्दगी से सबक़ लें, उसकी ज़िन्दगी के हालात मालूम करें, उसने अगर इस्लामी तअलीमात सिखाने में कोई काम किया हो, कोई किताब लिखी हो, उसका इल्म हासिल करके उस पर अमल करें। हज़रत हुसैन रज़ि0 के सिलसिले में मैं कहूंगा कि उनकी पैदईश की तारीख़ मालूम करें, वह रिवायत पढ़ें और सुनें जिन में उनके साथ नबी सल्ल0 के बरताव का ज़िक्र है। हज़रत हुसैन रज़ि0 से कई हदीसें मरवी हैं, पता लगा कर उनकी सही हदीसें पढ़ें–सुनें और उन पर अमल करें।

करबला के वाकिए में सब मर्द शहीद हो गये थे (अल्लाह उनके दरजात बुलन्द करे) हज़रत जैनुल आबिदीन बीमार खेमें में थे, औरतें खेमे में थीं, लिहाजा मैदाने करबला के जो बयानात हैं, वाकिअ़े की तरतीब के लिए तारीख़ लिखने वालों ने लिख दिये, लेकिन वह मुअ़तबर नहीं हैं, लिहाजा उनके सुनने पढ़ने से बचना चाहिए। अल्लाह तआला सारे शहीदों के दरजात बुलन्द फरमाए।

आमीन

दुआए मग़फिरत

मनोहर थाना (राजस्थान) के हाजी शैख़ हफीजुल्लाह 7 अक्तूबर को वफ़ात पा गये इन्ना लिल्लाहि व इन्न इलैहि राजिऊन। पाठकों से मरहूम के लिए दुआए मग़फिरत की दरख़्वास्त है। मरहूम के बेटे शैख़ अबरार नदवी नदवे में उस्ताद हैं वह सच्चा राही की इशाअत में बड़ा हिस्सा लेते हैं। इदारा उनके ग़म में बराबर का शरीक़ है और मरहूम के लिए मग़फिरत की दुआ करता है।

–इदारा

नकहत की तबलीग़

नकहत की बहन फरहत उससे दो साल बड़ी है उसकी तअ़लीम घर ही में हुई है। उसने अपनी अम्मी और अब्बू से उर्दू पढ़ना और लिखना सीखा है, उर्दू अच्छी तरह पढ़ लेती है मगर लिखने में कमज़ोर है। कुर्आन मजीद नाजिरा माँ से पढ़ लिया है। जब उस का निकाह उसके मामूँ के लड़के साबित से होना तै हुआ और दादी को इसकी खबर दी गई तो वह बहुत खुश हुई और घर में एलान किया कि अब तक हम लोग अनजाने में शादी ब्याह में जो करते रहे हैं अल्लाह उसे मुआफ करेगा लेकिन अब जब हमारी पोती आलिमा हो कर आई है तो उससे पूछ कर इस शादी में वही होगा जो अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया होगा। इस एलान पर घर वाले बहुत खुश हुए और सबने कहा कि अगर ऐसा नही हो तो बेटी को आलिमा बनाने का फाइदा ही क्या है।

दादी ने नकहत को बुलाया साथ में दोनों बहुओं को भी बुला कर बिठाया और नकहत से पूछा बता बेटी लगन होगी या नहीं, नकहत बोली दादी यह तो हिन्दुओं की रस्म है इसका इस्लामी निकाह से कोई तअल्लुक़ नही है। दादी बोली और बेटी मंगनी, मांझा, उबटन, तेल, मैन? नकहत बोली जब निकाह की बात तै हो गई तो मंगनी हो गई जहाँ तक मांझे की बात है कि निकाह से पहले लड़की को गोशा नशीन कर दिया जाए इसमें तो कोई हरज नहीं मालूम होता है, लेकिन अगर लड़की मांझे न बिढाई जाय तो भी कोई हरज नही है। रही बात उबटन की तो यह कोई ज़रूरी नही मगर बाजी अपने हाथ से लगा लिया करें तो कोई हरज नहीं, इससे बदन की जिल्द जरा चिकनी और साफ हो जाती है जो औरत के हुस्न में इजाफा करती है लेकिन यह कोई जरूरी नहीं और जो यह रस्म है कि कई रोज़ तक उबटन नावन लगाए यह मेरे नज़दीक ठीक नहीं और बे ज़रूरत अपना बदन दूसरे से मलवाना सही नही है। रही बात तेल, मैन और रतजगे की तो यह रस्म तो जरूर छोड़ देना चाहिए इनका इस्लामी निकाह से कोई तअल्लुक़ नही है।

बड़ी बी ने दोनों बहुओं को मुखातब करके कहा सुनो न लगन हो, न नावन उबटन लगाए, न तेल मैन और न रतजगा हो। रहा मांझे बैठना तो यह ठीक लगता है, अस्ल में जिस लड़की की शादी तै होती है उसकी सहेलियां उसको छेड़ती हैं और उसको शर्मिन्दा करती हैं लिहाजा उसको मेरे कमरे में मांझे बिठा दो. मैं और नकहत उसके साथ खाना खा लिया करेंगे। और उसका दिल बहला लिया करेंगे, और उबटन लगाने की बात ठीक मालूम होती है लिहाज़ा सरसों पीस कर उसको दे दी जाए और वह रुख़्सती से पहले कुछ दिनों अपने हाथ अपने बदन पर मल लिया करें। सब ने कहा अम्मां ऐसा ही होगा। नकहत एक बात अपनी माँ के सामने कहने से शरमाई और दादी के कान में कही दादी! बाजी की रुख़्सती ऐसी तारीख में हो जब बाजी पाक साफ रहें। बड़ी बी ने बहुओं को मुखातब करके कहा, नकहत ने बड़े काम की बात कही, और कहा दीन की बात में शर्म क्या, बहुओं को नकहत की बात बताते हुए कहा और जब मैं बिदा हो कर आई तो बड़ी मुश्किल में पड़ गई थी, इसका ज़रूर ख्याल करना चाहिए। नकहत की माँ बोली बात बहुत ही माकूल है और मुझे

मालूमात हैं मैं इनके अब्बू से कह दूँगी कि चान्द के महीनें की 5 से 10 तारीख तक रुख़सती की तारीख न रखी जाए। मजलिस बर्खास्त हुई और नकतह की माँ ने उसके अब्बू को इस जरूरी बात से आगाह कर दिया। नकहत के अब्बू ज़ाहिद तब्लीगी जमाअत से जुड़े हुए थे मगर बूढ़ी वालिदा के एहतिराम में घर की बाज रस्में दूर न कर पा रहे थे, नकहत की इस कामियाबी पर बहुत खुश हुए। अपने निसबती भाई शाकिर को बुलाया और कुछ गुफ्तगू के बाद फरहत के निकाह की तारीख 11 रबीउल अव्वल तै हो गई इस गुफ्तगू में नकहत और उसकी माँ भी शरीक हुईं इसलिए कि शाकिर नकहत के मामूँ थे। यह भी तै हुआ कि ज़्यादा से ज़्यादा निकाह के लिए साबित के साथ सिर्फ 10 लोग होंगे, 11,12 बजे तक आ जाएंगे,. अव्वल वक्त जुह्र की नमाज़ होगी मस्जिद ही में निकाह होगा, महर 10,000/– रूपया होगा। यह तै कर के शाकिर साहब अपने घर गये और वलीमें की तैयारी में लग गये यह सफर की 20 तारीख थी अभी निकाह को 20 रोज़ बाकी थे।

इधर दादी अम्मां ने नकहत को बुलाया और कहा बेटी मेरी शादी में तो शहनाई बजी थी तेरी माँ की शादी में भी शहनाई बजी थी, बारात वाले दिन गोले भी दगे थे और दरवाजे पर तरह–तरह के अनार छोड़े गये थे मालूम होता था कि वाकई शादी का घर है बड़ी धूम धाम थी बड़ा अच्छा लगता था, बेटी बताओ खुशी मनाने के लिए इनमें से कुछ हो सकता है? नकहत बोली दादी अगर अल्लाह का खौफ न हो, उसकी पकड़ का डर न हो तो सब कुछ हो सकता है, लेकिन अगर अल्लाह का डर हो उसका लिहाज़ हो, नबी सल्ल0 से मुहब्बत हो उनकी पैरवी को जरूरी समझा जाए तो दादी निकाह एक इबादत है, हाँ निकाह ऐसी इबादत है जिससे तमाम अज़ीज़ों को खुशी होती है, मगर यह खुशी नाच, बाजा, आतिश बाजी जैसे गुनाहों से मनाना एक पाकीज़ा इबादत को खराब करना है। दादी आखिर हम लोग ईद की खुशियाँ भी तो मनाते हैं लिहाजा निकाह की खुशी भी फुजूल खर्ची से बचते हुए खाने पीने, और साफ सुथरे रह कर मनाना चाहिए, अलबत्ता औरतों के बीच अगर कुछ बच्चियाँ कुछ अच्छे अशआर पढ़ लें तो कोई हरज नही। लिहाजा दादी बाजे गाजे और आतिश बाजी को भुला दिया जाए। दादी ने कहा ठीक है बेटी ऐसा ही होगा।

नकहत ने अपनी माँ से कहा कि अब्बू से कहिए कि नकाह की इजाज़त वह ख़ुद निकाह के दिन से पहले ही फरहत बाजी से ले लें, निकाह के रोज़ औरतों के बीच आकर इजाज़त लेनां अगरचे जाइज़ है मगर अच्छा नही मालूम होता।

फरहत की चारपाई दादी के पास डाल दी गई दादी पोती जब तक बातें करती, कभी नकहत भी फरहत के पास आ बैठती कभी फरहत की कोई सहेली आ जाती इस तरह फरहत के दिन गुज़रते रहे। वह जब तक अपने हाथों अपने जिस्म पर उबटन मल कर नहा लेती, नमाज़ की पाबन्दी करती यहाँ तक कि 11 रबीउल अव्वल आ गई। दादी ने नकहत को बुलाया और पूछा आज फरहत को नावन नहलाएगी या नहीं, नकहत ने कहा दादी, बाजी जैसे पहले खुद से नहा रही थीं बेहतर है कि 8,9 बजे नहा कर जो जोड़ा उनके लिए तैयार किया गया है पहन लें। बे ज़रूरत, और बिना किसी मजबूरी के किसी औरत या मर्द को दूसरा नहलाए या कपड़े पहनाए यह ठीक नही है। दादी ने इस बात को भी पसन्द किया, फरहत ने नहा धो कर अपने कपड़े पहन लिए, अलबत्ता कंघी चोटी में, नीज़ कुछ जेवरात पहनाने में उसकी

सहेलियों ने मदद की।

11 बजे शाकिर साहब अपने बेटे साबित और 9 दूसरे करीबी लोगों के साथ जाहिद (नकहत के वालिद) के दरवाजे आ गये, चाय पानी सें उनकी खातिर व मुदारात हुई थोड़ी देर आराम किया अव्वल वक्त जुह्र की अज़ान हुई सब मस्जिद गये नमाज बाद जाहिद साहब ने खुद बेटी का निकाह पढ़ाया दुआ हुई लोगों ने एक दूसरे को मुबारकबाद दी गले मिले। फुजूल खर्ची से बचते हुए अच्छे खाने का नज्म था, जाहिद के कुछ करीबी अजीज व अकारिब मदऊ थे सबने खाना खाया, कुछ आराम किया, अस्र की नमाज़ भी अव्वल वक्त अदा करके फरहत को "बदीद–ए–नम" (आँसुओं के साथ) रुख़सत किया गया।

12 रबीउल अव्वल को शाकिर ने बेटे का वलीमा किया। नकहत की तअ़लीम और दीनदारी के सबब गाँव में यह मिसाली शादी थी। अल्लाह तआ़ला इस रिश्ते को बा बरकत बनाए।

❑❑

हज़रत इमाम हुसैन रज़ि0

हज़रत इमाम हुसैन, नवासे रसूल के
हज़रत अली के लाड़ले, प्यारे बतूल के
वह जन्नती जवानों के, सरदार हैं बेशक
इस बात का सुबूत है, कौले रसूल से
एक है शहीदे सम तो, एक ख़ंजर से है शहीद
रब की तरफ से हैं, ये बहाने कबूल के
बुबक्र उमर उस्मान के, महबूब हैं दोनों
दोनों नमूने खास हैं, हुब्बे रसूल के
अल्लाह हुम्मा सल्लि अला मुहम्मददिंव
व अ़ला आलिही वअस्हाबिही
व बारिक व सल्लिम

नदवतुल उ़लमा से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाएं

1. हिन्दी: सच्चा राही–मासिक
(आपके हाथों में है)
वार्षिक मूल्यः 120/–

2. अंग्रेज़ी: फ्रेगरेंस ऑफ इस्ट –मन्थली
वार्षिक मूल्यः 120/–

3. उर्दू: तामीरे हयात–अर्ध मासिक
वार्षिक मूल्यः 250/–

4. अरबी: अलबासुल इस्लामी–
मासिक वार्षिक मूल्यः 300/–

5. अरबी: अर्राइद– अर्ध मासिक
वार्षिक मूल्यः 200/–

SACHCHA RAHI,
FRAGRANCE OF EAST,
TAMEER-E-HAYAT,
AL-BAAS-EL-ISLAMI,
A-RAID,

पत्रिका का वार्षिक मूल्य उसके नाम से ड्राफ्ट के माध्यम से भेजें, चेक अस्वीकार होंगे।

–:पताः–
कार्यालयः
मजलिसे सहाफत व नशरियात, टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

– डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

ऊटनी के दूध में रोगों से लड़ने की जादुई क्षमता– हृदय, तपेदिक तथा मधुमेह के रोगियों के लिए है फायदेमंद– ऊँटनी के दूध के बारे में कम ही लोग जानते हैं कि यह स्वास्थ्य के लिए बेहद लाभकारी है।

स्वाद में थोड़ा नमकीन व हल्के तीखे इस दूध से भले ही आप पहले नाक–भौं सिकोड़ें, लेकिन जब आपको इसके गुणों के बारे में पता चलेगा तब आपको इसका तीखापन भी स्वादिष्ट लगने लगेगा। राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर के वैज्ञानिकों ने अपने अनुसंधान में पाया कि ऊँटनी के दूध में प्रोटीन तथा कैल्शियम जैसे लाभकारी तत्व प्रचुर मात्रा में होते हैं। वहीं स्वास्थ्य के लिए हानिकारक वसा की मात्रा मात्र 2 से 2.50 प्रतिशत ही है। इस दूध को हृदय रोग, तपेदिक, मधुमेह जैसी बीमारियों के लिए लाभदायक पाया गया। इस दूध में अनेक औषधीय गुण पाए गए हैं जिस कारण वैज्ञानिकों ने दूध से एक सौंदर्य क्रीम का निर्माण भी किया है।

चेतावनी– काबुल में अमेरिकी दूतावास पर हमला करने वालों के पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी के साथ मोबाइल फोन संपर्कों की नई जानकारी मिलने के बाद भी अगर पाक नेता अड़ियल रुख जारी रखते हैं तो अमेरिका को इस्लामाबाद के खिलाफ दंडात्मक कारवाई शुरु करनी चाहिए।

रिश्तों में उतार चढ़ाव–

• 10 जुलाई 2011 : अमेरिकी सीनेट ने पाकिस्तान को सैन्य मदद के रूप में दिए जाने वाली 80 करोड़ राशि रोकी।

• 24 जून 2011 : अमेरिकी विदेश मंत्री हिलेरी क्लिंटन ने कहा, अमेरिका पाकिस्तान के साथ संबंधों को खत्म नहीं करना चाहता लेकिन पहले की तरह ही सैन्य सहायता को जारी भी नहीं रख सकता।

• 18 मई 2011 : पाँच डेमोक्रेटिक सीनेटरों डेयनी फिनस्टीन (कैरोलिना), राबर्ट (न्यूजर्सी), नेलसन (नेब्रास्का), मैक्स और जॉन (मोंटेना) ने एक पत्र लिखकर विदेश और रक्षा मंत्रालय से कहा था कि पाकिस्तान को सैन्य मदद देने से पहले यह जांच होनी चाहिए कि आतंक से लड़ने के प्रति वह कितना संजीदा है।

कहीं फिर सौदेबाजी तो नहीं कर रहा पाकिस्तान– पाकिस्तान को एक तरफ धौंस दिखाना और दूसरी तरफ पुचकारना अमेरिका की आदत रही है। अमेरिका में कई बार वित्तीय सहायत रोकने की मांग उठी और कई बार प्रशासन की तरफ से सहायता बंद करने की धमकी भी दी गई। लेकिन यह जगजाहिर है कि अमेरिका यह जानते हुए भी पाक को सहायता दे रहा है कि वह इसका दुरुपयोग (खासकर भारत के खिलाफ ताकत बढ़ाने के लिए) करता है। ऐसे में सवाल उठना लाजिमी है कि कहीं पाक फिर सौदे बाजी तो नहीं कर रहा है।

साल	सैन्य मदद	विकास कार्यों के लिए मदद
2002	1.36	1.233 अरब
2003	1.50	1.233 अरब
2004	1.20	1.233 अरब
2005	1.31	33.8 करोड़
2006	1.26	53.9 करोड
2007	1.115	56.7 करोड
2008	1.435	50.7 करोड
2009	1.689	1.36 अरब
2010	1.232	1.409 अरब
2011	1.685	(अरब डॉलर)

❑❑

अहले ख़ैर हज़रात से अपील

अल्लाह तआला का शुक्र है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी की संरक्षता में अपनी इल्मी व दीनी खिदमात में लगा हुआ है, इल्मे दीन के तालिब इल्मों की अधिकता के कारण रिहाइश (निवास स्थान) की बड़ी समस्या हो गई, जिसकी वजह से पिछले साल तालिब इल्मों के दाखिले सीमित करने पड़े, और नये तालिब इल्मों की एक बड़ी संख्या मायूस होकर वापस हो गई। इस सूरते हाल को देख कर नदवतुल उलमा की प्रबंधन कमेटी ने नये छात्रावास निर्माण का निर्णय लिया। अल्लाह की मदद के भरोसे पर निर्माण कार्य शुरु भी हो गया है।

इस नये छात्रावास में जो तीन मन्ज़िला होगा, 60 कमरे और 3 बड़े हाल होंगे, ताकि तालिब इल्मों की रिहाइश (निवास) के साथ दूसरी शिक्षा सम्बन्धित ज़रूरतें पूरी हो सकें।

इस निर्माण कार्य पर 2,35,00,000 (दो करोड़ पैंतीस लाख) रूपये, और एक कमरे पर लगभग चार लाख रूपये के खर्च का अन्दाज़ा है, जो इन्शाअल्लाह अहले ख़ैर के तआवुन (सहयोग) से पूरा होगा, हम उम्मीद करते हैं कि आप इस महत्वपूर्ण कार्य की ओर अवश्य ध्यान देंगे और नदवतुल उलमा के कार्यकर्ताओं का हाथ बटाएंगे, ताकि दीनी तालिबइल्म संतुष्ट होकर शिक्षा प्राप्त कर सकें, हमें अल्लाह तआला पर भरोसा है कि उसकी मदद से यह अहम काम पूर्ति को पहुँचेगा।

मौ0 मुफ़्ती मु0 ज़हूर नदवी
(नाएब नाज़िम, नदवतुल उलमा)

प्रो0 अतहर हुसैन
(मोतमद माल, नदवतुल उलमा)

मौ0 मु0 वाज़ेह रशीद नदवी
(मोतमद तअलीम, नदवतुल उलमा)

मौ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
(मोहतमिम, दारुलउलूम नदवतुल उलमा)

मौ0 मु0 हमज़ा हसनी नदवी
(नाज़िरे आम, नदवतुल उलमा)

चेक/ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें।	और इस पते पर भेजें।
NADWATUL ULAMA **A/C NO. 10863759733** **(State Bank of India Main Branch, Lucknow)**	**NAZIM NADWATUL ULAMA,** **P.O. BOX NO. 93, TAGORE MARG,** **LUCKNOW-226007 (U.P.)**